गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 181
दि. 02.11.2025,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

छोटा तिरुपति में बड़ा हादसा : वेंकटेश्वर मंदिर में भगदड़ से नौ श्रद्धालुओं की मौत, दर्जनों घायल — प्रशासन ने दिए जांच के आदेश

(जीएनएस)। श्रीकाकुलम। आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के काशीबुग्गा वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में शुक्रवार की सुबह श्रद्धालुओं पर दुखद कहर टूट पड़ा। एकादशी के पवित्र अवसर पर दर्शन के लिए उमड़ी भारी भीड़ के बीच मची भगदड़ में कम से कम नौ श्रद्धालुओं की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार हादसे के समय मंदिर परिसर में 25 हजार से अधिक भक्त कतार में खड़े थे। यह मंदिर "छोटा तिरुपति" के नाम से प्रसिद्ध है, जहां हर एकादशी पर दर्शन के लिए भक्तों का सैलाब उमड़ता है। बह लगभग 8 बजे दर्शन के लिए भक्तों की लंबी लाइन मंदिर के मुख्य द्वार तक फैली हुई थी। पुलिस और स्वयंसेवकों ने भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन अचानक हुई धक्का-मुक्की में रेलिंग टूट गई। कुछ श्रद्धालु नीचे गिर पड़े, और देखते ही देखते अफरातफरी मच गई। भारी भीड़ में कई लोग दब गए और वहां चीख-पुकार मच गई। कुछ ही मिनटों में स्थिति बेकाबू हो गई, जिसके बाद पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने बचाव अभियान शुरू किया।

घायलों को तुरंत पास के काशीबुग्गा सरकारी अस्पताल और श्रीकाकुलम जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया गया। इनमें से कुछ की हालत गंभीर बताई जा रही है। राहत कार्यों में अतिरिक्त एंबुलेंस और पुलिस बल बाहरी जिलों से मंगाए गए, ताकि घायलों को शीघ्र सहायता मिल सके। स्थानीय विधायक गौतु शीर्षा मौके पर पहुंचीं और स्वयं राहत कार्यों की निगरानी करने लगीं।

राज्य के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने हादसे पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना जताई। उन्होंने जिला प्रशासन को निर्देश दिया है कि घायलों को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधाएँ

दी जाएं और मृतकों के परिवारों को तत्काल मुआवजा प्रदान किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा, "यह घटना अत्यंत पीड़ादायक और असहनीय है। सरकार पीड़ित परिवारों के साथ खड़ी है और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।"

मंदिर प्रशासन की लापरवाही भी आई सामने

स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं का कहना है कि मंदिर प्रबंधन ने भीड़ नियंत्रण के पर्याप्त इंतज़ाम नहीं किए थे। श्रद्धालुओं ने आरोप लगाया कि प्रशासन ने प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, पीने के पानी और सुरक्षा व्यवस्था जैसे बुनियादी उपायों की अनदेखी की थी। पिछले वर्षों में भी एकादशी के दौरान यहाँ भीड़ बढ़ने की चेतावनी दी गई थी, परंतु इस बार व्यवस्थाएँ पूरी तरह नाकाफी साबित हुईं।

छोटा तिरुपति के नाम से प्रसिद्ध मंदिर की कहानी

काशीबुग्गा स्थित वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर को उत्तर आंध्र का "छोटा तिरुपति" कहा जाता है। इस मंदिर का निर्माण लगभग दस वर्ष पहले हरि मुकुंद पांडा परिवार द्वारा 12 एकड़ भूमि पर लगभग 20 करोड़ रुपये की लागत से कराया गया था। यह मंदिर तिरुमला बालाजी मंदिर की स्थापत्य शैली पर आधारित है और अपनी सुंदरता तथा धार्मिक महत्त्व के कारण पूरे राज्य में श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

भीड़ नियंत्रण और सुरक्षा पर उठे सवाल

विशेषज्ञों का मानना है कि इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ होने के बावजूद न तो अस्थायी बैरिकेडिंग की गई और न ही प्रवेश व निकास मार्गों को नियंत्रित किया गया। भीड़ प्रबंधन की इस विफलता ने हादसे को और भी भयावह बना दिया। पुलिस ने फिलहाल मंदिर प्रशासन के खिलाफ लापरवाही के आरोपों की जांच शुरू कर दी है।

इलाके में शोक और सन्नाटा

घटना के बाद पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। कई परिवार अपने प्रियजनों को खोने के गम में व्यथित हैं। आसपास के गांवों से लगातार लोग अस्पताल और मंदिर परिसर की ओर पहुँच रहे हैं। प्रशासन ने मृतकों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था सरकारी सहायता से कराने का आश्वासन दिया है।

यह हादसा एक बार फिर इस बात की गंभीर चेतावनी देता है कि धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर कितनी सख्त और व्यवस्थित योजना की जरूरत है। श्रद्धा के नाम पर लापरवाही की छोटी सी गलती भी कितने परिवारों को अपूरणीय क्षति पहुँचा सकती है — काशीबुग्गा की यह त्रासदी उसी का दुखद प्रमाण बन गई।

तंजानिया में लोकतंत्र पर संकट की छाया, समिया सुलुहू हसन की 97 प्रतिशत वोटों से जीत ने बढ़ाई हलचल

(जीएनएस)। डोडोमा (तंजानिया)। अफ्रीकी महाद्वीप का शांत और स्थिर माने जाने वाला देश तंजानिया इन दिनों राजनीतिक हलचल के केंद्र में है। राष्ट्रपति समिया सुलुहू हसन ने हालिया आम चुनावों में 97 प्रतिशत से अधिक मतों से भारी जीत हासिल की है। आधिकारिक नतीजे शनिवार को घोषित किए गए, लेकिन इस अभूतपूर्व विजय ने पूरे देश में लोकतंत्र की स्थिति पर गहरी बहस छेड़ दी है। विपक्षी दलों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और नागरिक अधिकार समूहों ने इस चुनाव को "गैर-प्रतिस्पर्धी, एकतरफा और पहले से तय नतीजों वाला" करार दिया है। चुनाव परिणामों के तुरंत बाद राजधानी डोडोमा और ज़ांज़ीबार सहित कई शहरों में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि चुनावों में सरकारी दखल, मीडिया सेंसरशिप और विपक्षी नेताओं के दमन ने मतदान प्रक्रिया को पूरी तरह प्रभावित किया। इस दौरान हिंसक झड़पों में कम से कम 10 लोगों की मौत हुई और दर्जनों घायल हुए। पुलिस और सेना ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए बल प्रयोग किया।

विपक्षी पार्टी चाडेमा के नेता तुंडू लिस्सू ने राष्ट्रपति हसन की जीत को "एक औपचारिक ताजपोशी" बताया। उनका कहना है कि यह

चुनाव जनता की पसंद नहीं, बल्कि सत्ता का एक सुनियोजित प्रदर्शन था। चुनाव से पहले लिस्सू को राजद्रोह के आरोपों में गिरफ्तार किया गया था, जबकि अन्य प्रमुख विपक्षी नेताओं को नामांकन भरने से ही रोक दिया गया। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, सत्ता पर दशकों से काबिज 'चामा चा मापिंदुजी' (CCM) दल ने पूरे देश के प्रशासनिक और मीडिया ढांचे पर इतनी गहरी पकड़ बना ली है कि विपक्ष के लिए कोई जगह ही नहीं बची है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि सरकार ने चुनाव के दौरान इंटरनेट और सोशल मीडिया पर भी कड़ी पाबंदियां लगाईं। लोकप्रिय मंच जामीयफोरम्स और एक्स (पूर्व ट्विटर) को बंद कर दिया गया ताकि असहमति की आवाज़ें सार्वजनिक न हो सकें। कई पत्रकारों ने बताया कि मतदान केंद्रों पर रिपोर्टिंग करने की अनुमति नहीं दी गई, और विदेशी मीडिया को सीमित पहुंच दी गई। राष्ट्रपति हसन ने अपनी भारी जीत को देश में स्थिरता और जनता के भरोसे की जीत बताया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार तंजानिया को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने और अफ्रीका के अग्रणी देशों की श्रेणी में लाने के लिए लगातार काम करेगी। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय आलोचनाओं को खारिज करते हुए कहा कि "देश की जनता ने मेरे विकास कार्यों पर भरोसा जताया है, और यही लोकतंत्र की असली जीत है।"

हालांकि, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि तंजानिया में लोकतंत्र एक गंभीर मोड़ पर खड़ा है। ह्यूमन राइट्स वॉच और एमनेस्टी इंटरनेशनल ने संयुक्त रूप से बयान जारी कर कहा कि चुनावी प्रक्रिया में निष्पक्षता, स्वतंत्रता और पारदर्शिता के बुनियादी मानकों की घोर अवहेलना की गई है।

सत्ता का यह केंद्रीकरण 1961 में ब्रिटेन से मिली आज़ादी के बाद से लगातार जारी है। तब से अब तक तंजानिया में 'सीसीएम' दल ही शासन कर रहा है, और उसका चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से गहरा राजनीतिक संबंध माना जाता है। यह भी आरोप है कि इस दल ने सरकारी नौकरशाही, सेना और मीडिया संस्थानों को अपने प्रभाव में लेकर राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को लगभग समाप्त कर दिया है।

"ये वासना नहीं, प्यार का मामला है" — सुप्रीम कोर्ट ने पॉक्सो के दोषी को किया बरी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की सर्वोच्च अदालत ने एक ऐतिहासिक और मानवीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए कहा कि हर अपराध को एक ही दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी पूर्ण न्यायिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (POCSO) अधिनियम के तहत दर्ज कार्यवाही को रद्द कर दिया। मामला उस व्यक्ति से जुड़ा था, जिसने एक नाबालिग लड़की के साथ शारीरिक संबंध बनाए थे, लेकिन बाद में उससे विवाह कर लिया और अब दोनों एक सुखी वैवाहिक जीवन जी रहे हैं। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और ए. जी. मसीह की दो सदस्यीय पीठ ने कहा कि "यह वासना नहीं, बल्कि प्रेम का परिणाम था।" अदालत ने यह भी नोट किया कि दंपति का एक एक वर्ष का पुत्र है, और महिला तथा उसके पिता — दोनों ने इस मामले में पति के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही समाप्त करने का समर्थन किया है। पीठ ने यह भी माना कि अपराध केवल किसी एक व्यक्ति के खिलाफ नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना के खिलाफ होता है। "हर अपराध समाज की आत्मा को झकझोरता है," न्यायालय ने कहा।

धर्मेंद्र अस्पताल में भर्ती: बॉलीवुड के 'ही-मैन' की हालत स्थिर, फैंस कर रहे जल्द स्वस्थ होने की दुआ

(जीएनएस)। मुंबई। हिंदी सिनेमा के महानायक और अपने दौर के सबसे लोकप्रिय अभिनेताओं में शुमार धर्मेंद्र को स्वास्थ्य समस्याओं के कारण मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 89 वर्षीय अभिनेता को बुधवार शाम अचानक सांस लेने में तकलीफ महसूस हुई, जिसके बाद उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया। हालांकि चिकित्सकों ने स्पष्ट किया है कि उनकी हालत अब स्थिर है और घबराने की कोई बात नहीं है। अस्पताल सूत्रों के मुताबिक धर्मेंद्र की तबीयत पर डॉक्टरों की विशेष टीम लगातार नजर रख रही है। वरिष्ठ चिकित्सक ने बताया कि धर्मेंद्र को हल्का श्वसन संक्रमण हुआ है और एहतियातन उन्हें आईसीयू में रखा गया है ताकि सभी जरूरी जांचें पूरी की जा सकें। फिलहाल उन्हें ऑक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया है और उनकी स्थिति में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। अस्पताल प्रशासन ने कहा है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद डिस्चार्ज की तारीख तय की जाएगी।

फिल्म जगत और फैंस में चिंता, सोशल मीडिया पर दुआओं की लहर

धर्मेंद्र के अस्पताल में भर्ती होने की खबर

ने उनके प्रशंसकों और बॉलीवुड जगत को चिंतित कर दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर उनके लिए "Get Well Soon Dharam Paaji" हैशटैग ट्रेंड कर रहा है। अभिनेता के बेटे सनी देओल और बॉबी देओल लगातार अस्पताल में मौजूद हैं और उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहते हैं। परिवार ने लोगों से अफवाहों से दूर रहने और केवल अस्पताल द्वारा जारी आधिकारिक अपडेट पर विश्वास करने की अपील की है। फिल्मी दुनिया के कई दिग्गज कलाकारों ने भी धर्मेंद्र के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है। अभिनेता अमिताभ बच्चन, हेमा मालिनी, शत्रुघ्न सिन्हा, और सुभाष घई ने सोशल मीडिया पर लिखा कि धर्मेंद्र न केवल एक महान अभिनेता हैं बल्कि भारतीय सिनेमा के जीवंत इतिहास का हिस्सा हैं।

90 के करीब उम्र, पर अब भी वही जिंदादिली

धर्मेंद्र हिंदी सिनेमा के उन सितारों में से हैं जिन्होंने अपनी सादगी और मजबूत व्यक्तित्व से दर्शकों के दिलों पर अमिट छाप छोड़ी है। 8 दिसंबर को वे 90 वर्ष के होने जा रहे हैं, और इस उम्र में भी उनकी सक्रियता और सकारात्मक सोच युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा बनी हुई है। धर्मेंद्र का फिल्मी करियर छह दशकों से अधिक का रहा है, जिसमें उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है। उनके प्रमुख किरदारों में 'शोले' के वीरू, 'चुपके-चुपके' के प्रोफेसर परमलाल त्रिपाठी, 'धरमवीर' और 'सत्यकाम' जैसी फिल्मों के यादगार पात्र आज भी लोगों के दिलों में जिंदा हैं।

अभिनय की नई पारी अभी जारी

धर्मेंद्र हाल ही में शाहिद कपूर और कृति सैनन अभिनीत फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' में नजर आए थे, जिसमें उनके अभिनय की सादगी ने दर्शकों को भावुक कर दिया। इससे पहले करण जौहर की फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में उनका अभिनय खूब सराहा गया था। अब वे प्रसिद्ध निर्देशक श्रीराम राघवन की आगामी फिल्म 'इक्कीस' में नजर आने वाले हैं, जिसमें अगस्त्य नंदा और सिमर भाटिया मुख्य भूमिकाओं में हैं।

धर्मेंद्र — एक जीवंत विरासत

पंजाब के संगरूर जिले में जन्मे धर्मेंद्र का जीवन संघर्ष और सफलता का संगम है। उन्होंने 1960 में 'दिल भी तेरा हम भी तेरे' से अपने करियर की शुरुआत की थी और जल्द ही अपने मजबूत अभिनय, रोमांटिक छवि और एक्शन भूमिकाओं के कारण देशभर में लोकप्रिय हो गए। उन्हें उनके प्रशंसक 'ही-मैन ऑफ बॉलीवुड' के नाम से पुकारते हैं। उनकी सादगी, विनम्रता और परिवार के प्रति गहरा लगाव उन्हें आज भी लाखों दिलों में जिंदा रखे हुए है।

फैंस की एक ही प्रार्थना — धर्म पा जी मुस्कुराते लौटें घर

अस्पताल के बाहर उनके प्रशंसकों का जमावड़ा लगा हुआ है जो मोमबत्तियां जलाकर और प्रार्थना करते हुए उनके जल्द स्वस्थ होने की दुआ कर रहे हैं। कई लोग उनके पुराने संवादों को याद कर भावुक हो उठे हैं। धर्मेंद्र की मुस्कुराहट और दिल से बोले गए शब्द आज भी भारतीय सिनेमा की आत्मा को छूते हैं।

शीतकालीन यात्रा से फिर जगने लगी उम्मीदें

(जीएनएस)। उत्तरकाशी। हिमालय की गोद में बसे उत्तरकाशी जनपद में जैसे ही चारधाम यात्रा के कपाट बंद हुए, वैसे ही धामों के द्वारों पर सन्नाटा छा गया। गंगोत्री और यमुनोत्री धामों में अब भले ही श्रद्धालुओं की आवाजाही थम गई हो, लेकिन उनकी आराधना का सिलसिला मुखबा और खरशाली गांवों में स्थानांतरित हो चुका है। मां गंगा और मां यमुना की मूर्तियों को विधिवत शीतकालीन प्रवास स्थलों पर ले जाया गया है, जहां अगले छह महीनों तक पूजा-अर्चना जारी रहेगी।

हालांकि, हर साल की तरह इस बार भी चारधाम यात्रा के समापन के बाद स्थानीय कारोबारियों और तीर्थपुरोहितों के चेहरे पर हल्की चिंता झलक रही है। कारण साफ है—चारधाम यात्रा के दौरान जो रौनक और आर्थिक गति इस क्षेत्र में दिखाई देती है, वह कपाटबंदी के साथ ही ठहर जाती है। मगर अब उम्मीदें इस बात पर टिकी हैं कि "शीतकालीन यात्रा" इस ठहराव को कुछ हद तक तोड़ सकेगी।

पिछले कुछ वर्षों से सरकार और स्थानीय प्रशासन शीतकालीन चारधाम यात्रा को प्रोत्साहन देने में जुटे हैं। विचार यह है कि श्रद्धालु जब गर्मियों में ऊंचाई वाले धामों में नहीं जा सकते, तब वे शीतकालीन मंदिरों में दर्शन कर अपनी आस्था को व्यक्त कर सकें। अगर यह पहल सफल रही तो न केवल तीर्थाटन को नया आयाम मिलेगा, बल्कि पर्यटन और रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

धराली और हर्षिल क्षेत्र में हालात अब धीरे-धीरे सामान्य हो रहे हैं। बीते अगस्त में आई खीरगंगा आपदा ने इस क्षेत्र की जीवन रेखा को बुरी तरह प्रभावित किया था, मगर अब बाजारों में दुकानें फिर खुलने लगी हैं, छोटे गेस्ट हाउसों में कुछ श्रद्धालु ठहरने लगे हैं। फिर भी स्थानीय व्यवसायियों का कहना है कि कपाटबंदी के साथ ही कारोबार में आई सुस्ती से उबरने में अभी कुछ समय लगेगा।

गंगोत्री मंदिर समिति के सचिव सुरेश सेमवाल बताते हैं कि शीतकालीन यात्रा के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ रहा है। उन्होंने कहा, "आज ही मां गंगा के मुखबा स्थित शीतकालीन मंदिर में करीब पांच सौ श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। यह संख्या हर साल बढ़ रही है। मान्यता है कि मुखबा में मां गंगा के दर्शन का फल गंगोत्री धाम के दर्शन के बराबर होता है।"

वहीं, यमुनोत्री धाम की देवी मां यमुना की पूजा अब खरशाली गांव में की जा रही है। यहां भी स्थानीय पुजारियों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में श्रद्धालुओं की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है।

स्थानीय लोगों और व्यापारियों का कहना है कि अगर राज्य सरकार, पर्यटन विभाग और स्थानीय प्रशासन मिलकर योजनाबद्ध ढंग से इस यात्रा को बढ़ावा दें, तो यह पूरी घाटी के लिए आर्थिक वरदान साबित हो सकती है। हर्षिल, मुखबा, खरशाली जैसे गांव जो सर्दियों में अक्सर वीरान हो जाते हैं, वे धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों से जीवंत रह सकते हैं।

पर्यटन विशेषज्ञों का मत है कि अगर "शीतकालीन चारधाम यात्रा" को थीम-आधारित पर्यटन योजनाओं, स्थानीय संस्कृति और लोक परंपराओं से जोड़ा जाए, तो यह उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था को सालभर गति देने में सक्षम होगी। इसके साथ ही इससे रोजगार, हस्तशिल्प और लोक संगीत जैसी परंपराओं को भी नया जीवन मिल सकता है।

नेपाल के मनांग में बर्फीले तूफान के बीच चला साहसिक बचाव अभियान, नौ घंटे में 11 विदेशी पर्यटक सुरक्षित निकाले गए

(जीएनएस)। काठमांडू। हिमालय की बर्फ से ढकी ऊंची चोटियों के बीच, जहां तापमान शून्य से कई डिग्री नीचे जा चुका था और हवाएं मौत का संदेश बनकर चल रही थीं, वहां नेपाल की सशस्त्र पुलिस बल (एपीएफ) ने ऐसा कारनामा कर दिखाया जो साहस और मानवता की मिसाल बन गया। मनांग जिले के दुर्गम तिलिचो बेस कैंप क्षेत्र में पांच दिनों से बर्फीले तूफान में फंसे 11 विदेशी पर्यटकों को नौ घंटे की कठिन और जोखिमपूर्ण मशक्कत के बाद सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

इन पर्यटकों में एक 9 वर्षीय बच्चा और एक बीमार महिला भी शामिल थीं, जिन्हें बेहद कठिन परिस्थितियों में जीवनदान मिला। एपीएफ के प्रवक्ता डीएसपी शैलेन्द्र थापा ने बताया कि यह अभियान पर्वतीय बचाव इकाई माउंटेन रेस्क्यू ट्रेनिंग स्कूल (एमआरटीएस) की विशेष टीम द्वारा संचालित किया गया। उन्होंने कहा कि बर्फ की मोटी परत, फिसलनभरे रास्ते, खराब दृश्यता और लगातार हो रही बर्फबारी के बावजूद बचाव दल ने हार नहीं मानी।

थापा ने बताया कि पर्यटकों में से एक के पैर में गंभीर चोट आई थी, जबकि अन्य का ऑक्सीजन स्तर सामान्य से काफी नीचे चला गया था। सभी को मौके पर ही प्राथमिक उपचार दिया गया और बाद में उन्हें सुरक्षित बेस कैंप तक पहुंचाया गया। बचाव दल ने विशेष उपकरणों, पोर्टेबल ऑक्सीजन सिलेंडरों और थर्मल गियर का उपयोग किया ताकि इस खतरनाक मिशन को पूरा किया जा सके।

इस अभियान का नेतृत्व एसपी टोपबहादुर डाँगी ने किया। उन्होंने बताया कि टीम को लगातार गिरती बर्फ को हटाते हुए रास्ता बनाना पड़ा। "हमने कई जगहों पर बर्फ की मोटाई दो फीट से भी अधिक पाई। दृश्यता इतनी कम थी कि कई बार हमारे सामने पांच मीटर से आगे कुछ दिख नहीं रहा था," डाँगी ने कहा। "लेकिन हमारे जवानों ने हार नहीं मानी — हर कदम सोच-समझकर रखा, हर जीवन को बचाने का संकल्प लेकर आगे बढ़े।"

अभियान के दौरान जवानों को कई बार रात में टॉर्च और फ्लेयर लाइट की मदद से रास्ता तलाशना पड़ा। हेलीकॉप्टर से बचाव की कोशिश खराब मौसम के कारण संभव नहीं थी, इसलिए टीम को पूरी दूरी पैदल तय करनी पड़ी। तापमान माइनस 15 डिग्री तक गिर गया था और तेज़ हवाओं के झोंकों से बचना मुश्किल हो गया था।

स्थानीय प्रशासन ने बताया कि मनांग और आसपास के ऊंचाई वाले इलाकों में संचार और आवागमन पूरी तरह ठप हैं। कई गांवों का संपर्क काठमांडू से कट चुका है और इंटरनेट सेवाएं भी बाधित हैं। अधिकारियों ने चेतावनी जारी की है कि अगले कुछ दिनों तक बर्फबारी जारी रह सकती है, इसलिए पर्यटकों को फिलहाल ट्रैकिंग से बचने की सलाह दी गई है।

नेपाल सरकार ने बचाव अभियान में शामिल जवानों की बहादुरी की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित करने की घोषणा की है। पर्यटकों ने भी अपने बयान में कहा कि "अगर नेपाली रेस्क्यू टीम समय पर न पहुंचती, तो शायद हम जिंदा नहीं बचते।" मनांग का यह बचाव अभियान केवल एक मिशन नहीं, बल्कि हिमालय की ठंडी हवाओं में बहती उस गूंज की तरह है — जो बताती है कि इंसानियत का जज़्बा सबसे कठिन परिस्थितियों में भी जिंदा रहता है।

संपादकीय

सामूहिक विफलता से उपजी त्रासदी

दशकों से मीडिया व पर्यावरण संरक्षण से जुड़े लोग तथा संगठन, जिस प्रदूषण संकट के प्रति चेताते रहे हैं, उसके घातक परिणाम अब साफ सामने नजर आने लगे हैं। विडंबना यह है कि देश की राजधानी व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र ही नहीं, अब देश के तमाम बड़े-छोटे शहरों से भी जानलेवा प्रदूषण की खबरें आ रही हैं। इस घातक व मारक संकट की पुष्टि बहुचर्चित मेडिकल जर्नल लैंसेट की हालिया रिपोर्ट करती है। रिपोर्ट दावा करती है कि देश की हवा में 2010 की तुलना में साल 2022 तक प्रदूषणवाहक पीएम 2.5 कणों की मात्रा में 38 फीसदी तक का बढ़ावा हुआ है। जिसका घातक प्रभाव यह है कि करीब सत्रह लाख लोग असमय काल-कवलित हो चले हैं। इससे होने वाला आर्थिक नुकसान अलग है। यह कहना कठिन है कि अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका के आंकड़े कितने विश्वसनीय हैं। बहुत संभव है कि सरकारें इन आंकड़ों पर सहमति न जताएं, लेकिन दीपावली के बाद दिल्ली व राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र समेत देश के विभिन्न शहरों में प्रदूषण जिस घातक स्तर तक पहुंचा है, वह हालात के गंभीर होने की ओर इशारा तो करता ही है। एक अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी ने दिल्ली को दुनिया के सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर का खिताब भी दिया है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अस्पतालों में प्रदूषणजनित रोगों का उपचार कराने वाले लोगों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है। जीवन के संघर्ष में रोजी-रोटी की कवायद में जुटे लोगों को यह अहसास भी नहीं होता है कि वे दिन में कितनी जहरीली हवा निगल रहे हैं। हमारे शहर केंद्रित विकास की विसंगितयां भी शहरों में प्रदूषण का दायरा बढ़ा रही हैं। शहरों में उगते कंक्रीट के जंगल न केवल हवा के प्राकृतिक प्रवाह को बाधित कर रहे हैं बल्कि वाहनों के सैलाब को भी बढ़ावा दे रहे हैं। विडंबना यह है कि इसके बावजूद राजनीतिक दलों व सरकारों में वह इच्छाशक्ति नजर नहीं आती, जो इस संकट के कारगर समाधान की राह दिखाती हो। निश्चित तौर पर प्रदूषण संकट की यह जानलेवा स्थिति हमें शर्मसार करने वाली है। यह हमारी सामूहिक विफलता की तसवीर भी उकेरती है। सर्दियों का मौसम आते ही दिल्ली व निकटवर्ती शहरों में जो प्रदूषण का बड़ा संकट दिखायी देता है, आखिर उसे साल भर सतर्कता के साथ क्यों नहीं देखा जाता। देश में आर्थिक असमानता व गरीबी के चलते लाखों लोग व बच्चे उन अस्वस्थकारी परिस्थितियों में काम करने को बाध्य हैं, जो कालांतर जानलेवा रोगों का सबब बनती हैं। देश में करोड़ों बाल श्रमिक पटाखा, कालीन और अन्य सांस के रोगों का संकट बढ़ाने वाले उद्योगों में काम कर रहे हैं। व्यवस्था का भ्रष्टाचार नियामक एजेंसियों को हिलने तक नहीं देता। दरअसल, यह प्रदूषण मौसमी बदलाव, पटाखों या पराली जलाने से ही नहीं पैदा होता। दरअसल, इसके मूल में शासन-प्रशासन की वह विफलता भी शामिल है, जो वातावरण को जहरीला बनाने वाले उद्योगों तथा निर्माण में उड़ने वाली धूल की सतर्क निगरानी नहीं करती। दरअसल, हमारे जीवन की कृत्रिमता व सुविधाभोगी जीवनशैली ने उन घातक गैसों को बढ़ावा दिया जो ग्लोबल वार्मिंग व प्रदूषण की कारक बनती हैं। इस समस्या का एक पहलू यह भी है कि देश की जनता इस आसन्न संकट के प्रति लगातार उदासीन बनी रहती है। वह चुनावों के दौरान न तो राजनेताओं पर इस संकट के समाधान के लिये दबाव बनाती है और न ही निजी जीवन में ऐसी कोई पहल करती है। इस तरह कहीं न कहीं इस प्रदूषण वृद्धि में हमारी भागीदारी बनी हुई है। अब भले ही कार्बन उत्सर्जित करने वाले ईंधन के उपयोग में कमी आई है, लेकिन अभी भी इस दिशा में काम करने की जरूरत है। हम निजी जीवन में जितनी स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देंगे, उतना ही प्रदूषण धीरे-धीरे कम होता जाएगा। जनता को शासन-प्रशासन पर दबाव बनाना चाहिए कि वह समय रहते प्रदूषण नियंत्रण के लिये प्रयास करे। व्यक्ति के तौर पर हमें पटाखे व पराली जलाने वालों की निगरानी करनी होगी, ताकि प्रदूषण का स्तर कम करने में हमारी भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

आस्था को राजनीति की सीढ़ी बना रहे जेडी वेंस ने पत्नी उषा समेत पूरे हिंदू समुदाय का अपमान किया

> कुछ साल पहले तक यही जेडी वेंस अपनी पत्नी की आस्था की सराहना करते थे। वह कहते थे कि उषा ने उन्हें ईश्वर और प्रार्थना की ओर लौटने की प्रेरणा दी। उनकी किताब **Hillbilly Elegy** में भी उषा की भूमिका को उनकी आध्यात्मिक यात्रा का केंद्र बताया गया था।

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की टिप्पणी ने एक बार फिर दिखा दिया है कि जब धर्म राजनीति का औज़ार बन जाता है, तो सबसे पहले सम्मान और संवेदनशीलता की बलि चढ़ती है। मिसिसिपी में हुए Turning Point USA कार्यक्रम में वेंस ने कहा कि उनकी पत्नी उषा वेंस, जो जन्म से हिंदू हैं, "धार्मिक नहीं थीं" और वह उम्मीद करते हैं कि "एक दिन वह भी ईसा मसीह में विश्वास करेंगी।" यह सुनते ही दुनियाभर के हिंदू समुदाय में नाराज़गी फैल गई। कुछ साल पहले तक यही जेडी वेंस अपनी पत्नी की आस्था की सराहना करते थे। वह कहते थे कि उषा ने उन्हें ईश्वर और प्रार्थना की ओर लौटने की प्रेरणा दी। उनकी किताब Hillbilly Elegy में भी उषा की भूमिका को उनकी आध्यात्मिक यात्रा का केंद्र बताया गया था। पर अब वही व्यक्ति अपनी पत्नी के धर्म को "अधूरा" बताने लगे हैं क्योंकि आज वह राजनीति के ऐसे दौर में हैं, जहाँ धर्म सिर्फ़ आस्था नहीं, बल्कि चुनावी हथियार बन चुका है।

हम आपको बता दें कि 2014 में जब जेडी और उषा वेंस का विवाह हुआ था, तब वह आधुनिक अमेरिका में सांस्कृतिक और धार्मिक सहअस्तित्व की मिसाल माना गया। शादी में वैदिक मंत्र भी थे और चर्च के गीत भी। वेंस उस समय गर्व से कहते थे कि उनकी पत्नी के हिंदू संस्कारों ने उन्हें विनम्रता और ईश्वर के करीब रहना सिखाया।

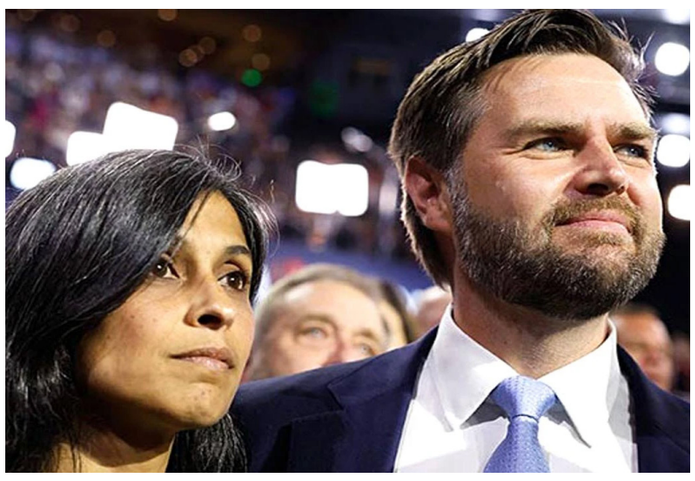

लेकिन अब, जब वह ट्रम्प समर्थक कट्टर दक्षिणपंथी राजनीति के केंद्र में हैं, तो वही उषा की आस्था "कमज़ोरी" के रूप में दिखाई जाने लगी है। यह बदलाव सिर्फ़ व्यक्तिगत नहीं, बल्कि उस राजनीतिक दबाव का नतीजा है जहाँ हर नेता से उम्मीद की जाती है कि वह "ईसाई पहचान" को खुलकर प्रदर्शित करे। दूसरी ओर, अमेरिका और भारत, दोनों जगह के हिंदू संगठनों ने वेंस के बयान को "धार्मिक अहंकार" बताया है। Hindu American Foundation (HAF) ने सीधा सवाल पूछा है कि जब वेंस अपनी पत्नी की आस्था से प्रेरित होकर खुद ईश्वर में लौटे, तो अब वह हिंदू धर्म को कमतर क्यों दिखा रहे हैं? संस्था ने यह भी याद दिलाया कि हिंदू धर्म में किसी को अपने धर्म में "लाने" की कोई आवश्यकता नहीं मानी जाती। हिंदू दर्शन बहुलता और सह-अस्तित्व पर टिका है— यह मानता है कि सत्य एक है, परंतु उसे पाने के कई मार्ग हैं। इसके विपरीत, वेंस का कहना है कि वह उम्मीद करते हैं कि उनकी पत्नी "कभी ईसा को अपनाएँगी", इस विचारधारा के बिल्कुल खिलाफ़ है। देखा जाये तो असल समस्या यह नहीं कि वेंस ईसाई हैं; समस्या यह है कि उन्होंने अपनी पत्नी के विश्वास को कमतर दिखाकर अपनी धार्मिक श्रेष्ठता साबित करने की कोशिश की। यही बात हिंदू समुदाय के लिए अपमानजनक है। वैसे जेडी वेंस का यह बयान अमेरिकी राजनीति के एक बड़े बदलाव का संकेत है, जहाँ आस्था अब निजी नहीं रही, बल्कि सार्वजनिक प्रदर्शन का विषय बन गई है। MAGA (Make America Great Again) आंदोलन के भीतर अब धर्म केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि पहचान और वोट का प्रतीक बन चुका है। वेंस का यह कहना कि "ईसाई होना मतलब दूसरों के साथ अपने विश्वास को साझा करना" इस मानसिकता को दिखाता है, जिसमें "साझा करना" दरअसल "मनवाना" बन गया है। ऐसी सोच में धार्मिक स्वतंत्रता की जगह धार्मिक श्रेष्ठता ले लेती है।

उषा वेंस अब तक सार्वजनिक रूप से बहुत कम बोलती हैं। लेकिन जो लोग उन्हें जानते हैं, वह कहते हैं कि वह एक शांत, दृढ़ और सहिष्णु व्यक्तित्व हैं। उन्होंने कभी अपने पति से यह नहीं कहा कि वह हिंदू बनें, न ही अपनी संस्कृति को छोड़ें। उनके जीवन में धर्म एक संतुलन और संवाद का माध्यम रहा है। इस पृष्ठभूमि में जेडी वेंस का बयान न केवल उनके प्रति अन्याय है, बल्कि उन लाखों अंतरधार्मिक परिवारों का भी अपमान है जो प्रेम और परस्पर सम्मान पर टिके हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि जब धर्म प्रचार बन जाए, तो प्रेम खो जाता है। जेडी वेंस की यह टिप्पणी यह दिखाती है कि राजनीतिक महत्वाकांक्षा कैसे व्यक्तिगत रिश्तों और धार्मिक संवेदनाओं को निगल जाती है। जो व्यक्ति कभी अपनी पत्नी के धर्म से प्रेरणा लेता था, आज उसी धर्म को "अधूरा" बताकर अपने वोटरों को खुश कर रहा है। यह घटना सिर्फ़ अमेरिका के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक चेतावनी है कि जब धर्म संवाद की जगह प्रचार का माध्यम बन जाता है, तो सत्य की जगह सत्ता ले लेती है।

उषा वेंस की आस्था, उनकी शांति और उनका मौन, दरअसल उस हिंदू विचार की ताकत है जो बिना प्रचार के भी जीवित है। लेकिन जेडी वेंस की राजनीति हमें यह याद दिलाती है कि दुनिया में अभी भी ऐसे लोग हैं जिन्हें दूसरे की आस्था से ज़्यादा अपनी पहचान की चिंता है। और यही वह जगह है जहाँ आस्था हार जाती है और राजनीति जीत जाती है। जेडी वेंस की टिप्पणी न केवल एक पत्नी के सम्मान का हनन है, बल्कि उन लाखों अंतरधार्मिक परिवारों के लिए भी अपमानजनक संदेश है, जो संवाद और सह-अस्तित्व पर विश्वास करते हैं।

बहरहाल, वेंस का यह "राजनीतिक बपतिस्मा" शायद उन्हें MAGA समर्थकों की तालियाँ दिला दे, लेकिन इससे उन्होंने उस अमेरिका की उस भावना को कमजोर किया है, जो विविधता और समानता पर टिकी है। अब भले वेंस विवाद पर तमाम तरह की सफाई देते रहें लेकिन इस पूरे प्रकरण का सबसे बड़ा सबक यही है कि धर्म का सार विश्वास में है, प्रचार में नहीं और जब आस्था राजनीति की सीढ़ी बन जाए, तो ईश्वर भी मौन हो जाता है।

प्रेरणा

मां की आज्ञा सबसे बड़ी : आशुतोष मुखर्जी का आत्मसम्मान

भारत की शिक्षा और न्याय व्यवस्था के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जो केवल अपनी विद्वता के कारण नहीं, बल्कि अपने अडिग चरित्र, संस्कारों और आत्मसम्मान के कारण अमर हो गए। ऐसे ही व्यक्तित्व थे कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति और उच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश सर आशुतोष मुखर्जी। वह व्यक्ति जो अपनी बौद्धिक क्षमता के बल पर अंग्रेज़ों को भी विस्मित कर देता था, परंतु जिसके लिए सबसे ऊँचा स्थान किसी गवर्नर या राजा का नहीं, बल्कि अपनी मां की आज्ञा का था।

यह वह समय था जब भारत पर ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता थी और अंग्रेज़ अधिकारी अपने पद की ताकत से सबको झुकाने की कोशिश करते थे। लेकिन आशुतोष मुखर्जी ऐसे भारतीय थे जिनकी रीढ़ कभी नहीं झुकी। वे अपने सिद्धांतों के लिए किसी भी पद, सम्मान या लाभ का मोह नहीं रखते थे। उनका मानना था कि एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति वही है, जो अपने संस्कारों, अपने आत्मसम्मान और अपने परिवार की मर्यादा को सर्वोपरि रखे।

आशुतोष मुखर्जी की माताजी अत्यंत धार्मिक, संस्कारी और दृढ़निश्चयी महिला थीं। उन्होंने अपने पुत्र को बचपन से ही यह सिखाया था कि चरित्र ही मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है। उस समय भारत में विदेश जाना यानी समुद्र पार करना, "कलापानी जाना" कहलाता था, जिसे परंपरागत हिंदू समाज में धर्मभ्रष्ट माना जाता था। आशुतोष जब युवा हुए, तब उनकी योग्यता के कारण उन्हें कई बार विदेश जाने के अवसर मिले, लेकिन उनकी माताजी ने हर बार उन्हें मना किया।

एक बार ब्रिटिश गवर्नर लॉर्ड कर्जन स्वयं आशुतोष मुखर्जी से मिलने आए। वे उनके ज्ञान, प्रशासनिक कौशल और शिक्षा के क्षेत्र में किए गए सुधारों से अत्यंत प्रभावित थे। लॉर्ड कर्जन चाहते थे कि आशुतोष ब्रिटेन जाकर वहां के शिक्षाविदों से मुलाकात करें और भारत की प्रतिभा का परिचय दें। उन्होंने कहा, "आप जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को ब्रिटेन अवश्य जाना चाहिए, ताकि आपकी विद्या और भारत की संस्कृति की झलक हमारे देश में दिख सके।"

आशुतोष मुखर्जी ने शांत स्वर में कहा, "महोदय, यह मेरे लिए गौरव की बात है, परंतु मेरी माताजी ने मुझे विदेश जाने की अनुमति नहीं दी है। जब तक वे अनुमति नहीं देंगी, मैं समुद्र पार नहीं कर सकता।"

लॉर्ड कर्जन को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि कोई व्यक्ति ब्रिटिश गवर्नर की आज्ञा को भी ठुकरा सकता है। उनके अहंकार को यह बात चुभ गई। उन्होंने थोड़े कठोर स्वर में कहा, "आप अपनी माताजी से जाकर कहिए कि भारत के गवर्नर लॉर्ड कर्जन आपको ब्रिटेन जाने का आदेश दे रहे हैं।"

यह सुनकर आशुतोष मुखर्जी ने बिना एक क्षण गँवाए दृढ़ आवाज़ में उत्तर दिया, "महोदय, मैं आशुतोष मुखर्जी हूं। मैं अपनी माताजी की आज्ञा के विरुद्ध किसी की भी आज्ञा नहीं मान सकता, फिर भले ही वह किसी भी देश का गवर्नर जनरल हो या संसार का सबसे बड़ा शासक।"

कमरे में एक गहरी चुप्पी छा गई। सामने बैठे ब्रिटिश गवर्नर ने पहली बार किसी भारतीय को इस तरह दृढ़ता से अपने संस्कारों और आत्मसम्मान की रक्षा करते देखा था। लॉर्ड कर्जन ने धीरे से कहा, "मिस्टर मुखर्जी, आपके शब्दों में वह शक्ति है, जो पूरे भारत को गौरवान्वित करती है।"

यह प्रसंग केवल एक घटना नहीं, बल्कि उस आत्मगौरव का प्रतीक था जो भारतीय संस्कृति की जड़ में बसता है। आशुतोष मुखर्जी ने दिखा दिया कि शिक्षा केवल ज्ञान नहीं देती, बल्कि व्यक्ति को यह भी सिखाती है कि कौन-सी आज्ञा सबसे बड़ी है — मां की आज्ञा, जो किसी गवर्नर या साम्राज्य की शक्ति से भी ऊपर होती है।

उस दिन से लोगों ने उन्हें "बंगाल का लायन" कहना शुरू किया। उनकी आँखों में आत्मविश्वास की चमक थी, आवाज़ में सच्चाई की गूंज थी और चरित्र में भारतीयता की गंध थी। उन्होंने जीवन भर मां की इच्छा का सम्मान किया, और कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।

उनकी यह घटना केवल इतिहास की किताबों में दर्ज एक प्रसंग नहीं है, बल्कि हर युग के लिए यह एक प्रेरणा है — कि चाहे सत्ता कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, एक मां के संस्कार और पुत्र का आत्मसम्मान उससे कहीं अधिक महान होते हैं। आशुतोष मुखर्जी का यह दृढ़ वाक्य आज भी भारतीय आत्मा में गूंजता है — "मैं अपनी मां की इच्छा के विरुद्ध किसी की भी आज्ञा नहीं मान सकता।"

जहां मिट्टी महके मेहनत से बसे वहीं हरियाणा

एक नवंबर, 1966, एक यादगार तारीख है, जिसने पंजाब की गोद से अलग होकर भारत के मानचित्र पर एक नए सपने को जन्म दिया। यह था हरियाणा। यह राज्य न तो बहुत बड़ा था, न संसाधनों में सम्पन्न, पर इसके पास था कुछ ऐसा जो हर सफलता की जड़ बनता है। वह है मेहनत, आत्मविश्वास और अपनी मिट्टी से अटूट प्रेम। हरियाणा ने अपने अस्तित्व की शुरुआत संघर्ष से की, लेकिन आज वही संघर्ष उसकी पहचान नहीं बल्कि सबसे बड़ी शक्ति बन चुका है।

हरियाणवी किसान ने देश को अन्न दिया, उद्योगों ने अर्थव्यवस्था को गति दी, खिलाड़ियों ने विश्व मंच पर भारत का झंडा बुलंद किया, और बेटियों ने घर की चौखट से निकलकर नेतृत्व और सम्मान दोनों अर्जित किए। यह वही हरियाणा है जिसने खेतों की मिट्टी से हरित क्रांति बोई, फैक्ट्रियों से औद्योगिक क्रांति रची, स्कूलों और विश्वविद्यालयों से ज्ञान क्रांति जगाई, और खिलाड़ियों के पसीने से गौरव की क्रांति लिखी।

आज हरियाणा गांवों की मिट्टी से निकलकर कॉर्पोरेट गलियारों तक पहुंच चुका है। एक ऐसा राज्य जो कृषि में आत्मनिर्भर, उद्योग में अग्रणी, खेल में विजेता और समाज में परिवर्तनकारी है। लेकिन इस सफर के साथ चुनौतियां भी आईं। फिर भी, हरियाणा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा, क्योंकि इस धरती के लोगों की रगों में सिर्फ खून नहीं, जिद, हौसला और कर्म की ताकत दौड़ती है। हरियाणा आज सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि एक विचार है - एक सोच जो कहती है कि 'जहां मिट्टी मेहनत से महके, वहीं सच्चा हरियाणा बसता है।'

हरियाणा का नाम ही 'हरियाली' से निकला है, और यही इसका स्वभाव भी है। स्वतंत्र भारत के शुरुआती दशक में जब देश खाद्यान्न संकट से गुजर रहा था, तब हरियाणा के किसानों ने हरित क्रांति की दिशा तय की। करनाल, कुरुक्षेत्र, जींद, कैथल और सिरसा जैसे जिलों ने वह इतिहास रचा जिसने भारत को खाद्यान्न आत्मनिर्भर बनाया। हरियाणा के किसानों ने नई तकनीक अपनाई। सिंचाई व्यवस्था सुधारी, ट्रैक्टर और मशीनों को खेतों में उतारा, और प्रयोगात्मक खेती का दौर शुरू किया। आज वही किसान ड्रोन से स्प्रे करने, जैविक खेती करने और सौर ऊर्जा से सिंचाई करने वाला आधुनिक कृषि-वैज्ञानिक बन चुका है। यह वही धरती है जिसने कभी हरित क्रांति दी थी, और अब 'ब्लू एनर्जी' व 'ग्रीन फार्मिंग' की दिशा में नए अध्याय लिख रही है।

जहां कभी बैलों की गाड़ियां थीं, आज वहां इंजन और मशीनों की गूंज है। हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद, मानेसर, सोनीपत और पानीपत जैसे शहर अब भारत की औद्योगिक रीढ़ बन चुके हैं। यह राज्य अब 'मेक इन इंडिया' की आत्मा और 'डिजिटल इंडिया' की धड़कन दोनों है। गुरुग्राम को आज भारत की 'कॉरपोरेट राजधानी' कहा जाता है, जहां दुनिया की बड़ी कंपनियों के मुख्यालय हैं और हजारों युवाओं को रोजगार मिलता है। औद्योगिक नगरी फरीदाबाद ने नया मुकाम प्रदेश को दिया। पानीपत ने टेक्सटाइल, मैन्युफैक्चरिंग और पेट्रो-प्रोडक्ट्स से औद्योगिक क्रांति को नया बल दिया। हरियाणा की आर्थिक ताकत अब केवल उद्योगों में नहीं, बल्कि स्टार्टअप्स और नवाचारों में भी दिखाई देती है।

हरियाणा की मिट्टी ज्ञान और खेल दोनों की जननी रही है। भारतीय सेनाओं में हर छठा सैनिक और दसवां अधिकारी हरियाणा की माटी से जुड़ा है। शिक्षा के क्षेत्र में एमडीयू रोहतक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय जैसे संस्थान राज्य की बौद्धिक शक्ति हैं। नई शिक्षा नीति के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में कॉलेजों का विस्तार, स्किल डेवलपमेंट सेंटरों की स्थापना और डिजिटल लर्निंग ने हरियाणा को शैक्षणिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है। और अगर बात खेलों की हो, तो हरियाणा पूरे भारत का गर्व है। ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा, साक्षी मलिक, बजरंग पुनिया, विनेश फोगाट, दीपक पुनिया जैसे नाम हरियाणा की मिट्टी की देन हैं। हरियाणा के गांव अब 'खेलग्राम' बन चुके हैं, जहां पसीना सम्मान में बदलता है और संघर्ष सफलता में।

हरियाणा को लिंगानुपात के मुद्दे पर आलोचना झेलनी पड़ी थी। लेकिन आज वही हरियाणा महिला सशक्तीकरण की नई परिभाषा लिख रहा है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान ने सिर्फ आंकड़े नहीं सुधारे, बल्कि सोच बदली। हरियाणा की महिलाएं अब खेती से खेल, पंचायत से संसद और घर से उद्योग तक हर जगह नेतृत्व कर रही हैं।

हरियाणा अब 60वें वर्ष की ओर बढ़ रहा है। एक ऐसा सफर जिसने खेतों की मिट्टी से लेकर कॉर्पोरेट मीनारों तक, ओलंपिक पदक से लेकर महिला सशक्तीकरण तक हर क्षेत्र में पहचान बनाई। यह वही हरियाणा है जिसने इतिहास के हर सवाल का जवाब कर्म से दिया। यह राज्य भारत को यह सिखाता है कि छोटा राज्य भी बड़े सपने पूरे कर सकता है, अगर उसके लोगों की जड़ें मिट्टी से जुड़ी हों। इस सफर में विकास के साथ चुनौतियां भी आईं। बेरोजगारी, अपराध, नशे की समस्या, पर्यावरणीय असंतुलन और शहरीकरण की अव्यवस्था जैसे मुद्दे राज्य के सामने हैं। लेकिन हरियाणा की सरकारें और नागरिक मिलकर इनसे लड़ने को तैयार हैं। 'ग्रीन हरियाणा', 'डिजिटल हरियाणा', 'युवा रोजगार मिशन' और 'स्वच्छ हरियाणा' जैसे कार्यक्रम बताते हैं कि राज्य अब केवल विकास नहीं, टिकाऊ विकास की दिशा में कदम बढ़ा रहा है।

अभियान

कार्तिक में तुलसी चालीसा का विशेष महत्व : श्रीहरि की कृपा से बदल जाएगी किस्मत

हिंदू पंचांग में कार्तिक महीना अत्यंत पवित्र और पुण्यदायी माना गया है। यह महीना केवल एक समय का सूचक नहीं, बल्कि भक्ति, श्रद्धा और ईश-समर्पण का प्रतीक है। कार्तिक मास की आभा उस भक्ति में झलकती है जिसमें भक्त अपने भीतर के अंधकार को हरकर दिव्यता की ओर बढ़ता है। यह महीना भगवान श्रीहरि विष्णु को समर्पित होता है, जिन्हें सृष्टि का पालनकर्ता और धर्म का आधार कहा गया है। इस मास में किए गए सभी धार्मिक कार्य, व्रत, स्नान, जप, दान और पूजा अनंत गुना फलदायी माने जाते हैं।

शास्त्रों में वर्णित है कि कार्तिक मास में तुलसी का विशेष पूजन करना अत्यंत शुभ होता है, क्योंकि तुलसी देवी स्वयं लक्ष्मी का ही एक दिव्य रूप मानी गई हैं। तुलसी के बिना भगवान विष्णु की पूजा अधूरी मानी जाती है। श्रीहरि स्वयं कहते हैं — "जो भक्त मुझे तुलसी पत्र चढ़ाता है, वह सभी यज्ञों का फल प्राप्त करता है।" तुलसी के हर पत्ते में श्रीहरि का वास है, और कार्तिक के हर दिन में भक्ति का अवसर। इसीलिए कहा गया है कि जो व्यक्ति इस मास में तुलसी पूजा और तुलसी चालीसा का पाठ करता है, उसके जीवन में अद्भुत परिवर्तन आते हैं।

तुलसी केवल एक पौधा नहीं, बल्कि जीवन में पवित्रता और सात्विकता का प्रतीक है। तुलसी माता का संबंध सीधे श्रीहरि विष्णु से है। कहा जाता है कि जब देवी तुलसी ने भगवान विष्णु की कठोर तपस्या की थी, तब श्रीहरि ने उन्हें यह वरदान दिया कि जो कोई तुलसी की पूजा करेगा, वह स्वतः मेरी कृपा का पात्र बनेगा। इसलिए कार्तिक महीने में जब तुलसी के पौधे के समक्ष दीपक जलाया जाता है, तो वह केवल एक साधारण ज्योति नहीं होती — वह मन के अंधकार को मिटाकर भक्ति के प्रकाश से जीवन को आलोकित कर देती है।

शास्त्रों में यह भी उल्लेख है कि कार्तिक मास के दौरान तुलसी चालीसा का पाठ करने से जीवन की कई बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती हैं। तुलसी चालीसा में

तुलसी माता के 40 पदों में उनके गौरव, उनके पुण्य प्रभाव और उनके द्वारा प्राप्त होने वाले दिव्य आशीर्वाद का वर्णन मिलता है। कहा गया है कि तुलसी चालीसा का नियमित पाठ करने से घर में लक्ष्मी का आगमन होता है, रोग और दरिद्रता का नाश होता है तथा घर का वातावरण पवित्र और शांतिमय बनता है।

कार्तिक मास में तुलसी चालीसा के पाठ का सबसे शुभ समय प्रातःकाल या सायंकाल का माना गया है। इस समय तुलसी के पौधे के सामने घी का दीपक जलाकर, चंदन, फूल, जल और अक्षत अर्पित करने के बाद श्रद्धापूर्वक तुलसी चालीसा पढ़नी चाहिए। पाठ के अंत में तुलसी माता की आरती कर "ॐ तुलस्यै नमः" का जप करना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति के जीवन से नकारात्मकता दूर होती है और उसके भाग्य का द्वार खुलने लगता है।

कहते हैं कि तुलसी की कृपा से मनुष्य के जीवन में चमत्कारिक बदलाव आते हैं। जिस घर में तुलसी माता का वास होता है, वहाँ कभी दुर्भाग्य, अस्वस्थता या दरिद्रता नहीं ठहरती। तुलसी का पौधा घर के वातावरण को पवित्र बनाता है और उसकी सुगंध नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है। तुलसी चालीसा के पाठ से मन में शांति, बुद्धि में स्थिरता और हृदय में भक्ति का संचार होता है।

कार्तिक मास के दौरान तुलसी पूजन का एक और विशेष पर्व आता है — तुलसी विवाह, जो देवउठनी एकादशी के दिन मनाया जाता है। इस दिन तुलसी माता का विवाह भगवान शालिग्राम के साथ संपन्न कराया जाता है। यह विवाह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि दिव्य प्रेम और समर्पण का प्रतीक है। जो भक्त तुलसी विवाह में सम्मिलित होते हैं या घर में तुलसी विवाह का आयोजन करते हैं, उनके जीवन में सुख, समृद्धि और वैवाहिक आनंद बढ़ता है।

यह महीना आध्यात्मिक ऊर्जा से भरा होता है। कहा जाता है कि कार्तिक में तुलसी के दर्शन मात्र से पापों का नाश हो जाता है और तुलसी पत्र से भगवान विष्णु का पूजन करने पर समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। तुलसी चालीसा का पाठ इस भक्ति को और सशक्त बनाता है। इसके पाठ से आत्मा निर्मल होती है, मन प्रसन्न होता है, और जीवन में शुभ फल की प्राप्ति होती है।

जो व्यक्ति कार्तिक मास में तुलसी चालीसा का पाठ करता है, वह न केवल पुण्य का भागी बनता है, बल्कि उसका जीवन भी श्रीहरि की कृपा से आलोकित हो उठता है। जिस प्रकार तुलसी का पत्ता भगवान विष्णु के चरणों में अर्पित होने से अमृत के समान हो जाता है, वैसे ही भक्त की भक्ति जब तुलसी चालीसा के माध्यम से व्यक्त होती है, तो उसके जीवन का हर अंधकार मिट जाता है और भाग्य स्वयं उसका साथ देने लगता है।

कार्तिक मास केवल एक धार्मिक समय नहीं, बल्कि आत्मा को ईश्वर से जोड़ने का अवसर है। तुलसी चालीसा इसका सबसे सरल, सबसे प्रभावशाली माध्यम है। जो व्यक्ति श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के साथ इसका पाठ करता है, उसके जीवन में श्रीहरि की कृपा बरसती है और किस्मत स्वयं उसके चरणों में झुक जाती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने एकता नगर में 'भारत पर्व-2025' का प्रारंभ कराया

भारत पर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'राज्य अनेक-राष्ट्र एक', 'समाज अनेक-भारत एक', 'भाषा अनेक-भाव एक' तथा 'रंग अनेक-तिरंगा एक' मंत्र को उजागर करता है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

एकता नगर में भारत पर्व द्वारा 15 दिनों तक समग्र भारत तथा भारतीय परंपराएँ पुनर्जीवित होने वाली हैं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एकता नगर में 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती पर विशेष प्रस्तुति आयोजित होगी

-: मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने हृदय में 'स्व' का नहीं, 'समस्त' व 'राष्ट्रहित प्रथम' का ही विचार रखा है
- प्रधानमंत्री ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तथा एकता नगर को विश्व स्तरीय पर्यटन केन्द्र बनाने का विजन दिया है
- एकता नगर प्रकृति, प्रगति एवं सांस्कृतिक विरासत के उदाहरण के रूप में समग्र विश्व को 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की झाँकी कराता है
- प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र पर चलकर आत्मनिर्भर भारत तथा एक भारत-श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए संकल्पबद्ध हों

-: 'भारत पर्व-2025' की विशेषताएँ :-

- भारत पर्व में देश के विभिन्न राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों की संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी
- प्रतिदिन शाम को दो-दो राज्यों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ की जाएंगी
- 45 फूड स्टॉल तथा एक लाइव स्टूडियो किचन का आयोजन किया गया है, जिसमें विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों के व्यंजन परोसे जाएंगे
- भारत दर्शन पैवेलियन में विभिन्न राज्यों के पैवेलियन बनाए गए हैं, जिनमें उन राज्यों के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों एवं सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाया जाएगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को एकता नगर स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी, आदिजाति विकास तथा खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री श्री पी. सी. बरंडा व अन्य महानुभावों की उपस्थिति में 'भारत पर्व-2025' का शुभारंभ कराया।

अखंड भारत के निर्माता तथा लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उत्सव के हिस्से के रूप में एकता नगर में इस भारत पर्व का आयोजन किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि यह भारत पर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए मंत्र 'राज्य अनेक-राष्ट्र एक', 'समाज अनेक-भारत एक', 'भाषा अनेक-भाव एक' तथा 'रंग अनेक-तिरंगा एक' को चरितार्थ करता है। इस भारत पर्व में लोगों को 'अनेकता में एकता, यही हमारी विशेषता' का भाव प्रदर्शित करने वाली संस्कृति की झलक मिलने वाली है।

श्री पटेल ने जोड़ा कि विश्व नेता एवं यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (एसओयू) के निर्माण द्वारा सरदार साहब को उत्तम श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने कहा कि सरदार साहब ने 562 रजवाड़ों के विलय से एक भारत का निर्माण किया और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विकास के मार्ग पर श्रेष्ठ भारत का निर्माण कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सब सौभाग्यशाली हैं कि स्वतंत्रता के दशकों बाद हमें प्रधानमंत्री के रूप में एक ऐसा नेतृत्व मिला है, जिसने हृदय में 'स्व' का नहीं, 'समस्त' का – 'राष्ट्रहित प्रथम' का ही विचार रखा है। श्री पटेल ने आगे कहा कि स्वतंत्रता के बाद वर्षों तक सरदार जयंती केवल एक परंपरागत कार्यक्रम बन गई थी, परंतु हमारे मोदी साहब ऐसे विजनरी लीडर हैं कि जो किसी को न सूझे, वह उन्हें सूझता है। मोदी साहब ने सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा भारत की एकता के लिए दिए गए बहुमूल्य योगदान का यथोचित गौरव किया है।

मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि मोदी साहब ने 2014 से सरदार साहब की जयंती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाने की प्रेरणा देशवासियों को दी है। उन्होंने कहा कि सरदार साहब के विराट कार्य जितनी ही विराट विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी से यह वनवासी प्रदेश विश्व के मानचित्र पर चमका है। वही व्यवस्थाएँ, वही प्रशासन, फिर भी यदि विशिष्ट विजन हो, तो स्थिति को कैसे बदला जा सकता है, यह मोदी साहब ने एसओयू एवं एकता नगर के निर्माण से सिद्ध किया है।

भारत पर्व के विषय में श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि इस भारत पर्व में प्रतिदिन शाम को दो-दो राज्यों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ की जाएंगी। 45 फूड स्टॉल तथा एक लाइव स्टूडियो किचन का आयोजन किया गया है, जिसमें विभिन्न राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेशों के व्यंजन परोसे जाएंगे।

इसके अतिरिक्त; 55 हस्तकला तथा हथकरघा स्टॉल भी लगाए गए हैं। यहाँ भारत दर्शन पैवेलियन में विभिन्न राज्यों के पैवेलियन बनाए जाए हैं, जिनमें उन राज्यों के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों और सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडाजी की भी इस वर्ष 150वीं जयंती मनाई जा रही है। इस उपलक्ष्य में एकता नगर में 15 नवंबर को बिरसा मुंडा जयंती पर विशेष प्रस्तुति आयोजित होगी।

उन्होंने कहा कि एक भारत-श्रेष्ठ भारत की तरह ही अनेकता में एकता की भावना हमारे उत्सवों-त्योहारों में भी साकार होती है। गुजरात का नवरात्रि – गरबा उत्सव, महाराष्ट्र का गणपति उत्सव, बिहारियों का छठ पूजा उत्सव या पश्चिम बंगाल का दुर्गा पूजा उत्सव; ये सभी उत्सव देश में जहाँ-जहाँ उन राज्यों के मूल निवासी परिवार रोजी-रोटी के लिए आकर बसे हैं, वहाँ सभी साथ मिलकर मनाते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जोड़ा कि श्री नरेन्द्रभाई की प्रेरणा से माधवपुर का मेला राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना है। यह मेला पूर्वोत्तर राज्यों तथा पश्चिम भारत को जोड़ता है। श्री मोदी के मार्गदर्शन में सौराष्ट्र-तमिल संगम तथा काशी-तमिल संगम के आयोजन से भारत की एकता व अखंडता अधिक मजबूत हुई है। इसे यह भारत पर्व उजागर करता है।

इतना ही नहीं; प्रधानमंत्री ने देश के राज्यों के राजभवनों में भी अलग-अलग राज्यों के स्थापना दिवस को लोगों के संग मनाए जाने के माध्यम से एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को साकार कराया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अब इस भारत पर्व द्वारा 15 दिनों तक एकता नगर में समग्र भारत एवं भारतीय परंपराएँ पुनर्जीवित होने वाली हैं। प्रधानमंत्री की 'विकास भी, विरासत भी' संकल्पना सच्चे अर्थ में पूरी होगी।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तथा एकता नगर को विश्व स्तरीय पर्यटन केन्द्र बनाने के लिए विजन दिया है और यहाँ सरदार साहब की प्रतिमा के साथ-साथ अनेक पर्यटन आकार्षण आयाम जोड़े हैं।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का भी संकल्प किया है। इसके लिए उन्होंने सरदार साहब के दिखाए एकता के मार्ग पर चलकर स्वदेशी अपनाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री ने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में भारत पर्व के विभिन्न स्टॉल की मुलाकात ली।

इस अवसर पर सांसद श्री जशुभाई राठवा, विधायक डॉ. दर्शनाबेन देशमुख, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री भीमसिंह तडवी, सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड (एसएसएनएल) के प्रबंध निदेशक श्री मुकेश पुरी, पर्यटन सचिव श्री राजेन्द्र कुमार, गुजरात पर्यटन निगम लिमिटेड (टीसीजीएल) के प्रबंध निदेशक श्री प्रभव जोशी, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के सीईओ श्री अमित अरोड़ा, आदिजाति विकास आयुक्त श्री आशिष कुमार, जिला कलेक्टर श्री एस. के. मोदी, जिला विकास अधिकारी (डीडीओ) श्री आर. बी. वाळा, पुलिस महानिदेशक श्री संदीप सिंह, जिला विकास अधिकारी श्री विशाखा डबराल, एसओयू के अपर कलेक्टर श्री गोपाल बामणिया सहित उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बेमौसम बारिश से फसलों को हुए नुकसान के संदर्भ में बुलाई उच्च स्तरीय बैठक

राज्य सरकार फसलों को हुए नुकसान की तत्काल समीक्षा-सर्वेक्षण कर किसानों को उदारतम सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को गांधीनगर में एक उच्च स्तरीय बैठक बुलाकर हाल ही में राज्य में हुई बेमौसम बरसात और मौसम में आए बदलाव के कारण फसलों को हुए नुकसान के संबंध में पूरी संवेदनशीलता दिखाते हुए किसानों की आपदा के समय उनके साथ खड़े रहने के दिशा-निर्देश दिए हैं।

राज्य में इस वर्ष असाधारण हालात में यह बेमौसम बारिश हुई है। इसके कारण किसानों की खड़ी फसलों को व्यापक नुकसान हुआ है। ऐसे में, राज्य सरकार का उद्देश्य संपूर्ण किसान हितैषी दृष्टिकोण के साथ किसानों की सहायता करना है। इतना ही नहीं, राज्य में पिछले दो दशकों से अधिक समय में ऐसी बेमौसम बरसात नहीं हुई है, ऐसी स्थिति में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व वाली राज्य सरकार इस वर्ष ऐसी बेमौसम बारिश के कारण किसानों को जो नुकसान झेलना पड़ा है, उसकी तत्काल समीक्षा-सर्वेक्षण करके किसानों को उदारतम सहायता प्रदान करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इन असाधारण परिस्थितियों में हुई बेमौसम बरसात तथा उसकी व्यापकता को देखकर मुख्य सचिव और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव को निर्देश दिए कि ऐसे हालात शायद ही कभी उत्पन्न होते हैं, इसलिए विशेष संवेदनापूर्वक राज्य के किसानों के हित में प्रभावित क्षेत्रों में फसलों को हुए नुकसान का पंचनामा और आवश्यक कार्रवाई कर कामकाज को इस तरह से 3 दिनों के भीतर इस प्रकार पूरा करें कि किसानों को कोई परेशानी हो, और इसकी रिपोर्ट राज्य सरकार को तुरंत भेजें। उन्होंने जिला कलेक्टरों, जिला विकास अधिकारियों और जिला खेतीबाड़ी अधिकारियों को तुरंत इस विषय में सूचित करने के आदेश दिए, ताकि किसानों को हुए नुकसान को लेकर सहयोग करने में मदद मिल सके।

मुख्यमंत्री ने जिला कलेक्टरों और जिला विकास अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन असाधारण हालातों और राज्य के किसानों की फसलों को हुए नुकसान के संबंध में प्रभावित क्षेत्रों में त्वरित पंचनामा करें और तीन दिनों में समीक्षा कर इसकी रिपोर्ट तुरंत राज्य सरकार को भेजें।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि ये ब्योरा जल्द से जल्द सरकार तक पहुंचें ताकि राज्य सरकार नुकसान से प्रभावित किसानों की सहायता कर सके।

मुख्यमंत्री ने गांधीनगर में इस संदर्भ में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में राज्य के अलग-अलग जिलों में कृषि फसलों को हुए नुकसान की समीक्षा सहित अन्य मुद्दों को प्राथमिकता देने को कहा।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी और कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी इस बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से शामिल हुए और संबंधित जिलों के नुकसान का ब्योरा दिया। इस उच्च स्तरीय बैठक में मुख्य सचिव श्री एम.के. दास, कृषि विभाग की अपर मुख्य सचिव श्रीमती अंजू शर्मा, राजस्व विभाग की मुख्य सचिव डॉ. जयंती रवि, वित्त विभाग के प्रधान सचिव श्री टी. नटराजन और मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह एवं सचिव डॉ. विक्रांत पांडे मौजूद रहे।

जीएसटी कलेक्शन में ऐतिहासिक उछाल : अक्टूबर में 1.96 लाख करोड़ की रिकॉर्ड वसूली, छोटे कारोबारियों के लिए रजिस्ट्रेशन सिस्टम हुआ आसान

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की अर्थव्यवस्था के लिए अक्टूबर 2025 का महीना बेहद उत्साहजनक रहा। सरकार द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक, अक्टूबर में गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) कलेक्शन ने अब तक का सर्वाधिक स्तर छू लिया है। कुल 1.96 लाख करोड़ रुपये की वसूली के साथ यह एक नया रिकॉर्ड बन गया है। यह पिछले साल की तुलना में 4.6 प्रतिशत अधिक है, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में खपत, व्यापारिक गतिविधियाँ और कर अनुपालन तीनों में स्थिर सुधार हो रहा है।

पिछले वर्ष अक्टूबर 2024 में जीएसटी कलेक्शन 1.87 लाख करोड़ रुपये रहा था, जबकि सितंबर 2025 में यह आंकड़ा 1.89 लाख करोड़ और अगस्त में 1.86 लाख करोड़ रुपये था। लगातार तीन महीनों से राजस्व में यह वृद्धि यह दर्शाती है कि आर्थिक गति पुनः तेज हो रही है और करदाताओं में पारदर्शिता तथा ई-गवर्नेंस पर भरोसा लगातार बढ़ा है।

22 सितंबर से लागू हुए जीएसटी 2.0 को इस तेजी का प्रमुख कारण माना जा रहा है। सरकार ने इस संशोधित ढांचे में टैक्स प्रणाली को अधिक सरल और व्यवहारिक बनाने के लिए बड़े बदलाव किए हैं। अब देश में केवल दो प्रमुख टैक्स स्लैब — 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत — लागू हैं। पहले मौजूद 12 प्रतिशत और 28 प्रतिशत वाले स्लैब पूरी तरह समाप्त कर दिए गए हैं। हालांकि, लग्जरी आइटम्स और 'सिन गुड्स' जैसे शराब, सिगरेट, तंबाकू उत्पादों पर विशेष 40 प्रतिशत जीएसटी दर रखी गई है।

इन बदलावों से बाजार में स्पष्ट प्रभाव देखने को मिला है। लगभग 375 वस्तुओं, जिनमें किचन उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, होम अप्लायंसेज और आवश्यक वस्तुएँ शामिल हैं, की कीमतें घट गई हैं। इससे उपभोक्ताओं को राहत मिली है और बाजार में मांग बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप टैक्स वसूली भी स्वाभाविक रूप से ऊँची रही।

सरकार के अनुसार, जीएसटी रिफंड में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। अक्टूबर 2025 में रिफंड की राशि 39.6 प्रतिशत बढ़कर 26,934 करोड़ रुपये तक पहुँच गई है। वहीं, सकल घरेलू राजस्व (ग्रॉस डोमेस्टिक रेवेन्यू) 2 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1.45 लाख करोड़ रुपये हो गया है। इंपोर्ट पर वसूले गए टैक्स में भी 13 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जो अब 50,884 करोड़ रुपये तक पहुँच चुका है। इस सकारात्मक आर्थिक परिदृश्य के बीच सरकार ने छोटे कारोबारियों के लिए भी बड़ी राहत की घोषणा की है। आज से नया जीएसटी रजिस्ट्रेशन सिस्टम लागू हो गया है, जो पूरी तरह डिजिटल और स्वचालित है। जिन कारोबारियों का मासिक टैक्स 2.50 लाख रुपये से कम है, उन्हें अब मैन्युअल दस्तावेज जमा करने की आवश्यकता नहीं होगी। उनका आवेदन तीन कार्यदिवस के भीतर स्वतः स्वीकृत हो जाएगा। यह सुविधा छोटे और मझोले उद्यमों (MSME सेक्टर) के लिए समय और संसाधनों की बड़ी बचत साबित होगी।

विशेषज्ञों के अनुसार, जीएसटी कलेक्शन का यह बढ़ता हुआ रुझान केवल राजस्व वृद्धि नहीं, बल्कि आर्थिक पुनरुद्धार और सरकारी नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन का संकेत भी है। भारत का कर ढाँचा धीरे-धीरे विश्वस्तरीय पारदर्शिता और डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है, जिससे आने वाले महीनों में राजस्व और निवेश दोनों में और मजबूती की संभावना जताई जा रही है।

वित्त मंत्रालय ने उम्मीद जताई है कि आने वाले महीनों में यह रफ्तार और तेज होगी तथा चालू वित्त वर्ष के अंत तक जीएसटी कलेक्शन 2 लाख करोड़ रुपये के औसत मासिक स्तर तक पहुँच सकता है — जो भारतीय कर इतिहास का नया अध्याय साबित होगा।

अनंत अनादि वडनगर : गुजरात सरकार की क्रांतिकारी पहल

वडनगर में देश के प्रथम भव्य वृंदावन गौचर पार्क के निर्माण की तैयारी, 15 करोड़ का प्रोजेक्ट बनेगा वैश्विक मॉडल

गौप्रेमी प्रधानमंत्री का जन्मस्थल बनेगा गौसेवा का तीर्थधाम

- 'गाय से गाँव' की कायापलट करने की अभूतपूर्व दूरदर्शिता
- विरासत-संस्कृति-पर्यटन-अर्थव्यवस्था का संगम
- साधारण गौशाला से बढ़कर अत्याधुनिक ग्रामीण प्रयोगशाला

(जीएनएस)। गांधीनगर, 1 नवम्बर : प्राचीन पौराणिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों से समृद्ध और वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जन्मभूमि के रूप में विश्व विख्यात वडनगर अब इंटीग्रेटेड एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट से जुड़े कई प्रोजेक्ट्स के साथ आधुनिक युग का भी महत्वपूर्ण दर्शनीय-पर्यटन स्थल बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार पिछले कुछ वर्षों से मेहसाणा जिले के इस महत्वपूर्ण स्थल वडनगर को 'अनंत अनादि वडनगर' विजन के साथ वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के अनेक प्रयास कर रही है। इन्हीं प्रयासों के अंतर्गत राज्य सरकार वडनगर में अब एक बहुत ही दूरदर्शितापूर्ण भव्य वृंदावन गौचर पार्क के निर्माण की क्रांतिकारी पहल करने जा रही है, जो अपनी तरह का देश का पहला वृंदावन गौचर पार्क होगा और देश एवं दुनिया के लिए वैश्विक मॉडल बनेगा। इतना ही नहीं; इस पार्क के निर्माण के बाद गौप्रेमी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जन्मस्थल वडनगर गौसेवा तीर्थधाम के रूप में ख्याति प्राप्त करेगा। यद्यपि इस पार्क के नाम से प्रतीत होता है कि यह पार्क गाय से जुड़ा हुआ होगा, परंतु इसकी परिकल्पना पर दृष्टि डालने से तो पता चलता है कि यह पार्क केवल गाय से नहीं, बल्कि गाँव से जुड़ा प्रोजेक्ट है।

शासन-प्रशासन की कवायद शुरू

14.98 करोड़ रुपए यानी करीब 15 करोड़ रुपए की लागत वाले इस प्रस्तावित वृंदावन गौचर पार्क के निर्माण का पूरा प्रोजेक्ट फिलहाल प्रस्ताव के रूप में है और नगर पालिका व जिला स्तर से लेकर राज्य स्तर पर शहरी विकास विभाग की ओर से इस प्रोजेक्ट पर कवायद शुरू कर दी गई है। राज्य सरकार द्वारा वृंदावन गौचर प्रोजेक्ट को अनुमोदन दे दिया गया है। राज्य स्तर पर गुजरात शहरी विकास कंपनी (जीयूडीसी) इस प्रोजेक्ट की नोडल एजेंसी होगी, जबकि जिला स्तर व नगर पालिका स्तर पर भूमि अधिग्रहण सहित समग्र निर्माण प्रक्रिया की जाएगी।

गाय आधारित ग्रामीण विकास का आदर्श मॉडल बनेगा पार्क

वृंदावन गौचर पार्क के नाम से इतर कि इस प्रोजेक्ट के विजन में सिर्फ गाय ही नहीं, बल्कि गाँव है। इस पार्क की परिकल्पना और इसके लक्ष्यों पर दृष्टि डालने पर पता चलता है कि यह प्रोजेक्ट पूरे देश के लिए एक 'गाय आधारित ग्रामीण विकास' का आदर्श मॉडल बनेगा। इस प्रोजेक्ट में 'गाय से गाँव' की कायापलट का अभूतपूर्व विजन है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई क्रांति का संचार करेगा। यह केवल एक गौशाला नहीं, बल्कि एक संपूर्ण ग्रामीण प्रयोगशाला और सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र होगी, जहाँ परंपरा और तकनीक का संगम होगा। पार्क को एक 'रूरल इनोवेशन हब' के रूप में विकसित किया जाएगा। राज्य सरकार की इस एक प्रोजेक्ट के जरिये गाय से लेकर गाँव-किसान-पशुपालक; तक सभी के भविष्य को उन्नत बनाने की योजना है।

डेयरी विकास, रोजगार एवं महिला सशक्तिकरण शामिल

प्रोजेक्ट के अंतर्गत पशु स्वास्थ्य में सुधार क्षेत्र में समय पर उपचार और बेहतर पोषण से गायों की उत्पादकता में वृद्धि, किसानों की आय में वृद्धि, दूध व डेयरी उत्पादों की बिक्री से पशुपालकों को सीधा आर्थिक लाभ पहुँचाने, पशु चिकित्सा, डेयरी उद्योग, परिवहन और विपणन में नए कार्यों से रोजगार के नए अवसर सृजित करने, बायोगैस तथा जैविक खाद से प्रदूषण में कमी और मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि से पर्यावरण संरक्षण करने, आधुनिक मशीनों और वैज्ञानिक पद्धतियों के उपयोग से तकनीकी उन्नति लाने, विरासत और कृषि पर्यटन के नए गंतव्य के निर्माण से पर्यटन को बढ़ावा देने, डेयरी उत्पादन एवं सहकारी समितियों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से महिला सशक्तिकरण करने, गांव में एकजुटता और आत्मनिर्भरता का भाव लाकर सामुदायिक विकास करने, जैविक खाद और प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग कर कृषि विकास करने जैसे विशाल लक्ष्य रखे गए हैं।

विरासत-संस्कृति-पर्यटन-अर्थव्यवस्था का संगम

यह गौचर पार्क वडनगर के प्राचीन मंदिरों, बावड़ियों, ऐतिहासिक किले और विरासत स्थलों के साथ जुड़कर एक नए पर्यटन परिपथ का निर्माण करेगा। पर्यटक यहाँ आकर ग्रामीण जीवन, पशुपालन की आधुनिक तकनीक और पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा उत्पादन को नजदीक से देख सकेंगे। यह स्थान 'एग्री-टूरिज्म' और 'कल्चरल टूरिज्म' का नया केन्द्र होगा। पार्क में स्थानीय कारीगरों, हस्तशिल्प और पारंपरिक व्यंजनों के लिए यहाँ बाजार और प्रदर्शनियों का आयोजन संभव होगा, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को सीधा लाभ मिलेगा।

गुजरात देगा पूरे देश को संदेश

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'ग्रामोदय से भारत उदय' के विज़न के अनुरूप इस प्रोजेक्ट के जरिये गुजरात पूरे देश को संदेश देगा कि गाय केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि आर्थिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी है। जब वृंदावन गौचर पार्क अपनी पूरी भव्यता में तैयार हो जाएगा, तब यह वडनगर के लिए केवल एक सुविधा नहीं, अपितु एक नई पहचान होगा। वडनगर एक ऐसा स्थान बनेगा; जहाँ इतिहास, संस्कृति, विकास और नवाचार एक साथ साँस लेंगे।

पर्यटनीय स्थल के रूप में दर्शनीय स्थल बनेगा गौचर पार्क

इस पार्क के निर्माण का प्राथमिक उद्देश्य वडनगर के सड़क मार्गों को आवारा पशुओं से मुक्त बनाना है। इस पार्क में गायों के लिए चारागाह के अनुरूप घास-चारे व पानी की व्यवस्था होगी; तो इन पशुओं की स्वास्थ्य देखभाल के लिए वेटरनरी हॉस्पिटल का भी निर्माण किया जाएगा। यह पार्क सीसीटीवी कैमरा निगरानी से लैस होगा। पार्क में मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट तथा अतिक्रमण को रोकने के लिए प्रोटेक्शन वॉल का भी निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही पार्क में गायों की अच्छी नस्लों के पालन-पोषण के प्रयास भी किए जाएंगे। ये सारे उपक्रम इस वृंदावन गौचर पार्क को एक पर्यटनीय स्थल के रूप में दर्शनीय स्थल भी बनाएंगे।

पश्चिम रेलवे - अहमदाबाद मंडल

निविदा आमंत्रण सूचना संख्या - DRM-SnT-ADI-Sig 09 (पुनः आमंत्रित) वर्ष 2025-26

मौजूदा पुराने फायर अलार्म सिस्टम के विस्तारण के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की आंशिक आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग

भारत के राष्ट्रपति की ओर से कार्यरत डीआरएम/एस एंड टी, निविदा संख्या डीआरएम-एसएनटी-एडीआई-सिग 09 (पुनः आमंत्रित) 2025-26 के लिए ई-निविदाएँ आमंत्रित करते हैं। अंतिम तिथि 24.11.2025, 15:00 है। बोलीदाता अपनी मूल/संशोधित बोलियाँ केवल अंतिम तिथि और समय तक ही प्रस्तुत कर सकेंगे। इस निविदा के लिए मैन्युअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जाएँगे और प्राप्त किसी भी मैन्युअल प्रस्ताव को अनदेखा कर दिया जाएगा।

कार्य का नाम: अहमदाबाद मंडल के मौजूदा पुराने फायर अलार्म सिस्टम के विस्तारण के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की आंशिक आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग (पुनः आमंत्रित)।

कार्य की अनुमानित लागत: ₹ 2,14,89,538.20/- (केवल दो करोड़ चौदह लाख नव्वासी हजार पाँच सौ अड़तीस रुपये और बीस पैसे)

बयाना राशि जमा : ₹ 2,57,500/-(केवल दो लाख सत्तावन हजार पाँच सौ रुपये)

बंद होने की तिथि और समय: 24.11.2025 को 15:00 बजे के बाद नहीं

निविदा खुलने की तिथि और समय: 24.11.2025 को 15:30 बजे।

ई-टेंडरिंग की वेबसाइट: www.ireps.gov.in ADI 192

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: twitter.com/WesternRly

4 करोड़ गरीबों का सपना हुआ साकार — पीएम मोदी बोले, हर गरीब को पक्का घर देना हमारी सरकार का

(जीएनएस)। नवा रायपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि "हर गरीब को पक्का घर देना हमारी सरकार का संकल्प है," और यह सपना अब साकार हो रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने पिछले 11 वर्षों में लगभग चार करोड़ गरीबों को आवास उपलब्ध कराया है, जिससे भारत में करोड़ों परिवारों का जीवन बदला है। अटल नगर–नवा रायपुर में आयोजित छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव के अवसर पर एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने छत्तीसगढ़ के गठन से लेकर अब तक का सफर करीब से देखा है। "जब यह राज्य बना था, तब गाँवों तक पहुँचना मुश्किल था। न सड़कें थीं, न पुल। आज, 25 साल बाद छत्तीसगढ़ के गाँवों में 40,000 किलोमीटर से अधिक सड़क नेटवर्क बिछ चुका है," उन्होंने कहा। प्रधानमंत्री ने बताया कि पिछले दशक में छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय राजमार्गों और हवाई संपर्क का तेजी से विस्तार हुआ है। "रायपुर से बिलासपुर की दूरी तय करने में पहले कई घंटे लगते थे, अब यात्रा का समय आधा हो गया है। रायपुर, बिलासपुर और जगदलपुर जैसे शहरों में हवाई सेवाएं शुरू हो चुकी हैं, जिससे व्यापार, शिक्षा और चिकित्सा सुविधाएं भी सुलभ हुई हैं," उन्होंने कहा। उन्होंने कहा कि एक नया चार-लेन राजमार्ग छत्तीसगढ़ और झारखंड को जोड़ेगा, जिससे औद्योगिक विकास को और गति मिलेगी। "कभी यह राज्य केवल खनिज संपदा के लिए जाना जाता था, लेकिन आज छत्तीसगढ़ एक औद्योगिक राज्य के रूप में उभर चुका है," मोदी ने कहा। उन्होंने राज्य की 25 वर्षों की यात्रा

की सराहना करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के योगदान की भी प्रशंसा की। गरीबी उन्मूलन की दिशा में सरकार के कार्यों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, "मैंने गरीबी को बहुत करीब से देखा है। गरीबों की दवा, उनकी पढ़ाई और उनकी कमाई—हमारी सरकार का ध्यान इन तीनों पर केंद्रित रहा है।" उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार की योजनाओं का उद्देश्य गरीबों को सम्मानपूर्ण जीवन देना है। मोदी ने बताया कि विष्णु देव साय सरकार ने अपने पहले ही वर्ष में सात लाख घर गरीबों को उपलब्ध कराए हैं। उन्होंने कहा, "25 साल पहले छत्तीसगढ़ में केवल एक मेडिकल कॉलेज था, आज यह संख्या 14 हो चुकी है। रायपुर में एम्स जैसी विश्वस्तरीय स्वास्थ्य संस्था है। यह दर्शाता है कि हमारी प्राथमिकता गरीब और सामान्य नागरिक का सशक्तिकरण है।" प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार अब तीन करोड़ और घरों के निर्माण का लक्ष्य लेकर चल रही है, ताकि हर परिवार को सिर पर छत और सम्मानजनक जीवन मिल सके। "पिछले वर्ष हमने गरीबों के लिए सात लाख से अधिक आवास इकाइयाँ प्रदान की हैं। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि देश के हर व्यक्ति को उसका खुद का घर मिले," उन्होंने कहा। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में कहा कि यह केवल "आवास निर्माण" नहीं, बल्कि "आत्मसम्मान निर्माण" का अभियान है। "हमारा हर घर, देश के विकास का प्रतीक है। जब गरीब का घर बनता है, तो राष्ट्र का भविष्य भी मजबूत होता है," प्रधानमंत्री ने कहा, जिसके बाद सभा में "मोदी–मोदी" के नारे गूंज उठे।

भारत माओवादी आतंक से मुक्ति की कगार पर: प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव में किया बड़ा ऐलान

(जीएनएस)। नवा रायपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को छत्तीसगढ़ के रजत महोत्सव समारोह के दौरान देश से माओवादी आतंक के लगभग पूरी तरह समाप्त होने की घोषणा करते हुए कहा कि भारत अब उस दौर में है जहां "लाल आतंक" की कहानी समाप्ति की ओर है। उन्होंने बताया कि आज देश में नक्सलवाद केवल तीन जिलों तक सिमट गया है — बीजापुर, सुकमा और नारायणपुर। नवा रायपुर में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 2014 में जब उनकी सरकार सत्ता में आई थी, तब 125 से अधिक जिले माओवादी हिंसा से प्रभावित थे। आज वह संख्या घटकर केवल तीन रह गई है। उन्होंने विश्वास जताया कि 31 मार्च 2026 तक भारत पूरी तरह माओवादी आतंक से मुक्त हो जाएगा। मोदी ने कहा, "यह देश की सुरक्षा बलों के परिश्रम, केंद्र और राज्य सरकारों के तालमेल, और आदिवासी क्षेत्रों में विकास योजनाओं के कारण संभव हुआ है।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ के जनजातीय क्षेत्रों ने दशकों तक हिंसा और भय का सामना किया, जहां कभी विकास कार्य पहुंच ही नहीं पाते थे। उन्होंने कहा, "सड़कों की जगह बंदूक की आवाजें सुनाई देती थीं, बच्चों को स्कूल के बजाय जंगल भेजा जाता था, और लोग अस्पतालों की जगह डर में जीते थे। आज वही इलाके शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं से जुड़ रहे हैं।" उन्होंने कांग्रेस सहित उन राजनीतिक दलों पर भी निशाना साधा, जिन्होंने उनके अनुसार, "संविधान की रक्षा के नाम पर" और "सामाजिक न्याय की आड़ में" वर्षों तक आदिवासी समाज के साथ अन्याय किया। मोदी ने कहा कि इन लोगों ने अपने राजनीतिक लाभ के लिए माओवाद को जीवित रखा, जबकि असली नुकसान आम नागरिकों को उठाना पड़ा। प्रधानमंत्री ने माओवाद के खात्मे का श्रेय एक "बहुआयामी रणनीति" को दिया, जिसमें सुरक्षा बलों के सशक्त अभियान, आदिवासी युवाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए शिक्षा और रोजगार योजनाएँ, और हिंसा प्रभावित क्षेत्रों में तेज़ विकास शामिल है। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने पिछले दशक में 10,000 किलोमीटर से अधिक सड़कों का निर्माण कराया है और दर्जनों नये मोबाइल टॉवर व पुलिस चौकियाँ स्थापित की हैं, ताकि शासन व्यवस्था गाँव-गाँव तक पहुँचे।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि माओवाद केवल एक सुरक्षा समस्या नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक अन्याय और आर्थिक उपेक्षा का परिणाम था। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार ने "विकास और विश्वास" के द्वार खोलकर इन इलाकों को एक नई दिशा दी है।

गृह मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, 2013 में जहाँ देश के 126 जिले वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित थे, वहीं 2025 में यह संख्या घटकर केवल 11 रह गई है, जिनमें से गंभीर स्थिति वाले तीन जिले छत्तीसगढ़ के हैं। केंद्र सरकार के अनुसार, यह अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है, जो यह साबित करती है कि भारत माओवादी आतंक से स्थायी मुक्ति की ओर बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के अंत में कहा, "आज मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ — वह दिन दूर नहीं जब छत्तीसगढ़ और पूरा भारत माओवादी आतंक से पूरी तरह मुक्त होगा। यह केवल एक प्रशासनिक जीत नहीं, बल्कि करोड़ों गरीबों के सपनों की जीत होगी।"

भगवंत मान का भाजपा पर तीखा पलटवार — 'शीशमहल' का झूठा प्रचार, केजरीवाल सरकारी गेस्ट हाउस में ठहरते हैं

(जीएनएस)। चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने शुक्रवार को भाजपा पर तीखा पलटवार करते हुए कहा कि "शीशमहल" के नाम पर फैलाई जा रही अफवाहें पूरी तरह से झूठ और राजनीतिक मंशा से प्रेरित हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा जानबूझकर झूठा प्रचार कर रही है ताकि लोगों का ध्यान असली मुद्दों से भटकाया जा सके।

दरअसल, भाजपा ने हाल ही में दावा किया था कि चंडीगढ़ में आम आदमी पार्टी (आप) प्रमुख अरविंद केजरीवाल के लिए एक आलीशान "शीशमहल" बंगला तैयार किया गया है, जहाँ वे पंजाब आने पर ठहरते हैं। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए भगवंत मान ने स्पष्ट किया कि भाजपा द्वारा जिस मकान नंबर 50 का ज़िक्र किया जा रहा है, वह कोई निजी बंगला नहीं बल्कि मुख्यमंत्री का आधिकारिक गेस्ट हाउस है। उन्होंने कहा, "मैं दस्तावेज़ों के साथ यह साफ करना चाहता हूँ कि मकान नंबर 45 मुख्यमंत्री का सरकारी आवास है, जबकि मकान नंबर 50 मुख्यमंत्री का कैंप कार्यालय और गेस्ट हाउस है। यह कई सालों से सरकार की संपत्ति है, जहाँ

मेहमान, अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति ठहरते हैं।" मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा यह झूठ इसलिए फैला रही है क्योंकि आम आदमी पार्टी अब गुजरात जैसे राज्यों में अपना जनाधार बढ़ा रही है। उन्होंने कहा, "भाजपा के पास पंजाब के लिए कोई ठोस मुद्दा नहीं बचा है, इसलिए वे झूठे वीडियो और फर्जी दावे फैलाकर लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं।" भगवंत मान ने अपने वीडियो संबोधन में जनता से अपील की कि वे भाजपा के इस "फर्जी प्रचार" पर विश्वास न करें। उन्होंने कहा, "केजरीवाल जी जब भी पंजाब आते हैं, तो गेस्ट हाउस में ठहरते हैं, और वहां पहले भी कई अधिकारी और अतिथि रह चुके हैं। यह न तो कोई निजी संपत्ति है और न ही किसी तरह का आलीशान शीशमहल।"

मुख्यमंत्री ने पलटवार करते हुए कहा कि अगर भाजपा को "असली शीशमहल" देखना है, तो उन्हें सिसवां स्थित कैप्टन अमरिंदर सिंह के बंगले या सुखबीर सिंह बादल के "सुख विलास" रिसॉर्ट में जाना चाहिए। मान ने कहा, "असली विलासिता और वैभव तो वहीं दिखता है, जहां जनता के पैसों से ऐशो-आराम किए जाते रहे हैं। हमारी सरकार जनता की सेवा के लिए है, न कि शाही ठाठ दिखाने के लिए।" मान ने भाजपा पर यह आरोप भी लगाया कि वह पंजाब सरकार की उपलब्धियों से घबराई हुई है। उन्होंने कहा कि पंजाब में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में जो काम आम आदमी पार्टी की सरकार ने किए हैं, वह विपक्ष को रास नहीं आ रहे। उन्होंने कहा, "भाजपा जानती है कि वह झूठे आरोपों के अलावा हमारे काम पर सवाल नहीं उठा सकती, इसलिए इस तरह के बेबुनियाद आरोप गढ़ रही है।" मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन के अंत में कहा कि उनकी सरकार पूरी पारदर्शिता के साथ काम कर रही है और जनता सच्चाई जानती है। "भाजपा जितना झूठ बोलेगी, पंजाब की जनता उतना ही सच पहचान लेगी," उन्होंने कहा।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता का स्तंभ बनता भारत, आसियान देशों ने किया राजनाथ सिंह के नेतृत्व का स्वागत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते सामरिक तनाव, समुद्री विवादों और वैश्विक शक्ति संतुलन के बीच भारत अब एक निर्णायक और स्थिर नेतृत्वकारी भूमिका निभाता दिखाई दे रहा है। मलेशिया की राजधानी कुआला लंपुर में आयोजित आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक में भारत की भूमिका की व्यापक सराहना हुई। बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने न केवल भारत की रणनीतिक दृष्टि प्रस्तुत की, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि भारत इस क्षेत्र में शांति, सहयोग और स्थिरता का सबसे भरोसेमंद साझेदार बनने के लिए प्रतिबद्ध है।

बैठक में मौजूद मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, इंडोनेशिया, फिलीपींस, वियतनाम, म्यांमार, कंबोडिया, लाओस और ब्रुनेई के रक्षा मंत्रियों ने भारत की आत्मनिर्भर रक्षा नीति, तकनीकी नवाचार और क्षेत्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण की प्रशंसा की। मलेशिया के रक्षा मंत्री ने राजनाथ सिंह की भूमिका को "रणनीतिक संतुलन के प्रतीक" के

रूप में रेखांकित करते हुए कहा कि भारत आज "महाशक्ति" के रूप में उभर चुका है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन के लिए उसकी मौजूदगी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत के साथ साइबर सुरक्षा, रक्षा अनुसंधान और औद्योगिक साझेदारी से आसियान देशों को दीर्घकालिक लाभ मिलेगा।

राजनाथ सिंह ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि भारत-आसियान रक्षा मंत्रियों की इस दूसरी अनौपचारिक बैठक से आने वाले वर्षों में रक्षा सहयोग का एक नया अध्याय खुलेगा। उन्होंने 2026-2030 की प्रस्तावित कार्य योजना में रक्षा, आपदा प्रबंधन, समुद्री सुरक्षा और तकनीकी साझेदारी जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता देने का सुझाव दिया। सिंह ने यह भी कहा कि भारत का उद्देश्य किसी पर दबाव बनाना नहीं, बल्कि साझेदारी के ज़रिए "साझा सुरक्षा" के सिद्धांत को सशक्त बनाना है।

फिलीपींस के रक्षा मंत्री ने इस दौरान कहा कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (UNCLOS) के पालन में अन्य देशों के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारत की इस नीति को "सामुद्रिक संप्रभुता और न्यायपूर्ण सहयोग" का प्रतीक बताया। फिलीपींस ने आने वाले भारत–आसियान समुद्री अभ्यास में सक्रिय भागीदारी का भी स्वागत किया, जिससे क्षेत्रीय नौसैनिक सहयोग और सामरिक समन्वय को मजबूती मिलेगी।

सिंगापुर और थाईलैंड ने युवाओं और रक्षा विशेषज्ञों के स्तर पर संयुक्त संवाद और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने का प्रस्ताव रखा। दोनों देशों ने यह सुझाव दिया कि भारत-आसियान रक्षा संबंधों को केवल सैन्य स्तर तक सीमित न रखकर, औद्योगिक और शैक्षणिक क्षेत्र में भी विस्तृत किया जाए।

बैठक के अंत में सभी आसियान देशों ने एक स्वर में यह स्वीकार किया कि भारत न केवल एक रणनीतिक साझेदार है, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता और शांति का वास्तविक स्तंभ भी बन चुका है। भारत की "सागर (Security and Growth for All in the Region)" नीति को सभी देशों ने सराहा और कहा कि भारत का यह दृष्टिकोण एक संतुलित, समावेशी और सहयोगपूर्ण क्षेत्रीय व्यवस्था की ओर मार्ग प्रशस्त करता है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत किसी भी प्रकार की आक्रामक प्रतिस्पर्धा में विश्वास नहीं करता। उन्होंने यह भी जोड़ा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र को "साझी समृद्धि और साझा जिम्मेदारी" के मंच के रूप में विकसित करने के लिए भारत हर स्तर पर अपने सहयोगी देशों के साथ खड़ा रहेगा।

कुआला लंपुर में हुई इस बैठक ने यह संदेश स्पष्ट कर दिया कि बदलते वैश्विक समीकरणों में भारत अब केवल एक सहभागी नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक भूमिका निभा रहा है — ऐसा राष्ट्र, जो शक्ति और शांति दोनों का संतुलन बनाए रखते हुए एशिया की नई सुरक्षा संरचना को आकार दे रहा है।

सेवा और साधना के प्रकाश से जगमगाया नवा रायपुर, प्रधानमंत्री मोदी ने किया 'शांति शिखर रिट्रीट सेंटर' का उद्घाटन

(जीएनएस)। रायपुर। राष्ट्र निर्माण की दिशा में अध्यात्म और सेवा के संगम का एक नया अध्याय शनिवार को तब जुड़ गया जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवा रायपुर के सेक्टर-20 स्थित ब्रह्मकुमारी संस्था के नवनिर्मित 'शांति शिखर रिट्रीट सेंटर – एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड' का भव्य उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की यात्रा केवल आर्थिक या तकनीकी विकास से पूरी नहीं होगी, बल्कि उसके पीछे आध्यात्मिकता, आत्मसंयम और सेवा का भी उतना ही गहरा योगदान है। उन्होंने कहा कि ब्रह्मकुमारी जैसी संस्थाएं इस आध्यात्मिक चेतना को जगाने में अनमोल भूमिका निभा रही हैं।

कार्यक्रम में राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, और ब्रह्मकुमारी संस्था की वरिष्ठ सदस्यों की उपस्थिति में जब प्रधानमंत्री ने दीप प्रज्वलन किया, तो वातावरण "ओम शांति" के मंत्रोच्चार से गूंज उठा। मंच पर उन्होंने कहा, "ब्रह्मकुमारी बहनों की साधना और सेवा ही इस संस्था की पहचान है। यहां शब्दों से अधिक कर्म की शक्ति दिखाई देती है। जब समाज में सत्य, सेवा और संयम की ज्योति जलती है, तब राष्ट्र की आत्मा प्रकाशित होती है।" प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि ब्रह्मकुमारी संस्था न केवल ध्यान और योग सिखाती है, बल्कि यह आंतरिक परिवर्तन का मार्ग दिखाती है। उन्होंने याद किया कि 2011 में जब वे अहमदाबाद में 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम में गए थे, तब उन्होंने देखा कि यह संस्था किस तरह आध्यात्मिकता को आधुनिक जीवन से जोड़ रही है। "मैंने इस संस्था को एक बीज से वटवृक्ष बनते देखा है," मोदी ने कहा, "यहां की हर बहन पहले स्वयं को तप, साधना और आत्मचिंतन से तैयार करती है। यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।"

उन्होंने आगे कहा कि आज जब विश्व अशांति, तनाव और पर्यावरण संकट जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, तब भारत की आध्यात्मिक परंपरा ही स्थिरता और संतुलन का आधार बन सकती है। "सेवा और साधना से जुड़ा हर प्रयास विश्व में भारत के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के संदेश को साकार करता है," प्रधानमंत्री ने कहा। मोदी ने इस मौके पर झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड राज्यों के स्थापना दिवस पर नागरिकों को शुभकामनाएं दीं और कहा कि "राज्यों के विकास में ही देश का विकास निहित है। जब कथन और कर्म में एकता होती है, तभी सच्चा परिवर्तन संभव होता है। यही एकता मुझे ब्रह्मकुमारी संस्था में हर स्तर पर दिखाई देती है।"

अपने संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री कुछ पल के लिए भावुक भी हुए। उन्होंने अपने लंबे जुड़ाव को याद करते हुए कहा, "मैं यहां अतिथि नहीं हूं, आपका ही एक सदस्य हूं। जानकी दीदी का स्नेह और राजयोगिनी दादी योगिनी जी का मार्गदर्शन मेरे जीवन की अनमोल स्मृतियां हैं।"

कार्यक्रम के समापन पर प्रधानमंत्री ने देश और विदेश में कार्यरत ब्रह्मकुमारी परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, "'ओम शांति' केवल एक शब्द नहीं, बल्कि यह भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है। इसमें स्थिरता, सद्भाव और ब्रह्मांडीय शांति का संदेश निहित है। यही वह आध्यात्मिक शक्ति है जो भारत को विश्व गुरु के मार्ग पर आगे बढ़ाती है।"

शांति शिखर रिट्रीट सेंटर के उद्घाटन के साथ ही नवा रायपुर अब आध्यात्मिक जागरण और आत्मविकास का एक नया केंद्र बन गया है। विशाल परिसर, ध्यान कक्षों, योग सभागारों और वैश्विक प्रशिक्षण केंद्रों से सुसज्जित यह संस्थान भारत की उस परंपरा का प्रतीक बन गया है जो विज्ञान और अध्यात्म दोनों को समान रूप से सम्मान देती है।

कश्मीर घाटी में फिर बदलने वाला है मौसम का मिज़ाज, चार और पांच नवंबर को बर्फबारी व बारिश की संभावना

(जीएनएस)। श्रीनगर। त्योहारों के मौसम में जम्मू-कश्मीर की वादियां एक बार फिर मौसम की करवट का इंतजार कर रही हैं। दीपावली से ठीक पहले घाटी में सर्द हवाओं का असर तेज़ होने वाला है। मौसम विभाग श्रीनगर के ताज़ा पूर्वानुमान के अनुसार, अगले कुछ दिनों तक मौसम भले ही साफ और शुष्क बना रहेगा, लेकिन चार और पांच नवंबर को पूरे कश्मीर संभाग में हल्की बारिश और ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी की पूरी संभावना जताई गई है।

मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक मुख्तार अहमद ने बताया कि फिलहाल घाटी के अधिकांश हिस्सों में दिन के तापमान में हल्की बढ़ोतरी बनी हुई है, लेकिन परसों यानी 4 नवंबर की शाम से मौसम का रुख अचानक बदल सकता है। पश्चिमी विक्षोभ (वेस्टर्न डिस्टर्बेंस) के सक्रिय होने के संकेत मिले हैं, जो जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल के पर्वतीय इलाकों पर असर डालेगा।

पूर्वानुमान के मुताबिक, 1 से 3 नवंबर तक मौसम साफ और धूप भरा रहेगा, जिससे सेब किसानों और बागवानों को राहत मिलेगी। हालांकि 4 नवंबर की रात से बादल घिरने लगेंगे और गुलमर्ग,

सोनमर्ग, पहलगाम, ज़ोजिला और द्रास जैसे ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की से मध्यम बर्फबारी हो सकती है। निचले इलाकों में बारिश के साथ तेज़ हवाओं के झोंके चलने की संभावना है, जो 5 नवंबर की सुबह तक बनी रहेगी। इसके बाद 6 से 13 नवंबर तक मौसम फिर से शुष्क रहने का अनुमान है।

मौसम विभाग ने एहतियात के तौर पर किसानों और पशुपालकों को सलाह दी है कि 4 और 5 नवंबर के दौरान खेतों में खुले में रखी फसलों और पशुओं को सुरक्षित स्थानों पर ले जाएं, क्योंकि अचानक गिरता तापमान और तेज़ हवाएं नुकसान पहुंचा सकती हैं। विभाग ने चेतावनी जारी की है कि कुछ इलाकों में गरज के साथ बिजली गिरने और आंधी जैसी स्थिति भी बन सकती है।

बर्फबारी के बाद तापमान में तेज़ गिरावट दर्ज की जाएगी, जिससे घाटी में ठंड का असर बढ़ेगा और सुबह-शाम सर्द हवाएं चलेंगी। श्रीनगर, बारामुला, पुलवामा और अनंतनाग में न्यूनतम तापमान तीन से चार डिग्री तक नीचे जा सकता है।

मौसम में इस बदलाव का पर्यटन पर सकारात्मक असर पड़ने की उम्मीद है। पर्यटन विभाग के अधिकारियों के अनुसार, "पिछले दो हफ्तों से मौसम साफ रहने के कारण गुलमर्ग और पहलगाम में पर्यटकों की संख्या बढ़ रही थी, अब जब पहली बर्फबारी होगी, तो घाटी की सुंदरता नई ऊंचाई पर पहुंचेगी।" होटल और ट्रैवल एजेंसियों ने भी इस सप्ताहांत के लिए एडवांस बुकिंग में बढ़ोतरी दर्ज की है।

स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह बर्फबारी सर्दियों के आगमन का पारंपरिक संकेत है। कई इलाकों में लोग पहले से ही ऊनी कपड़े और हीटिंग उपकरण तैयार करने लगे हैं। बुजुर्गों के अनुसार, "अगर इस बार नवम्बर के पहले हफ्ते में बर्फ गिर गई, तो सर्दी लंबी चलेगी और ठंड की तीव्रता पिछले साल से ज्यादा होगी।" इस बीच प्रशासन ने सभी ज़िलों के आपदा प्रबंधन विभागों को अलर्ट पर रखा है और पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं। अधिकारियों ने कहा कि अगर बर्फबारी तेज़ होती है, तो ज़ोजिला और गुलमर्ग मार्ग पर वाहन आवाजाही नियंत्रित की जा सकती है।

कश्मीर की घाटी में मौसम का यह बदलाव न सिर्फ़ ठंड की दस्तक है, बल्कि प्रकृति के उस रूप की शुरुआत है जिसे स्थानीय लोग "सर्दियों की पहली मुस्कान" कहते हैं। आने वाले दिनों में सफेद चादर ओढ़े पहाड़ और बर्फ से ढकी छतें एक बार फिर से पर्यटकों के लिए जन्नत का नज़ारा पेश करेंगी।

रीगन विज्ञापन विवाद पर ट्रंप से कनाडाई प्रधानमंत्री ने मांगी माफी

(जीएनएस)। ग्यॉंगजू (दक्षिण कोरिया)। अमेरिका और कनाडा के बीच चल रही व्यापारिक तनातनी के बीच अब एक नया विवाद उभर आया है, जिसने दोनों देशों के कूटनीतिक संबंधों में हलचल मचा दी है। यह विवाद एक राजनीतिक विज्ञापन से जुड़ा है, जिसमें अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन का पुराना क्लिप इस्तेमाल किया गया था। उस क्लिप में रीगन ने आयात शुल्कों को "आर्थिक तबाही की जड़" कहा था। इस विज्ञापन के प्रसारण से नाराज़ अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी, जिसके बाद कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी को व्यक्तिगत रूप से माफी मांगनी पड़ी।

यह माफी दक्षिण कोरिया के ग्यॉंगजू शहर में आयोजित एशिया-प्रशांत शिखर सम्मेलन के दौरान हुई। प्रधानमंत्री कार्नी ने मीडिया से बातचीत में स्वीकार किया कि उन्होंने ट्रंप से औपचारिक रूप से माफी मांगी। उन्होंने कहा, "मैंने राष्ट्रपति ट्रंप से स्पष्ट रूप से क्षमा मांगी और यह

भी बताया कि यह विज्ञापन मेरी अनुमति से नहीं चलाया गया था। मैंने ओन्टारियो के मुख्यमंत्री डग फोर्ड को पहले ही सलाह दी थी कि इस विज्ञापन को रोक दिया जाए। यह हमारा उद्देश्य नहीं था कि अमेरिका-कनाडा संबंधों में कोई तनाव उत्पन्न हो।"

विवादित विज्ञापन में रीगन के पुराने भाषण के एक हिस्से को राजनीतिक संदर्भ में इस्तेमाल किया गया था, जिसमें उन्होंने मुक्त व्यापार की वकालत करते हुए कहा था कि "आयात शुल्क राष्ट्रों के बीच दूरी बढ़ाते हैं और यह आर्थिक प्रगति के लिए घातक हैं।" इस विज्ञापन के चलते अमेरिकी प्रशासन ने इसे अपनी नीतियों पर सीधा हमला बताया। ट्रंप ने इसे "राजनीतिक रूप से प्रेरित और अपमानजनक" करार देते हुए कनाडा से आयातित कुछ वस्तुओं पर नए शुल्क लगाने की घोषणा कर दी थी। इसके साथ ही दोनों देशों के बीच चल रही व्यापार वार्ता को भी अनिश्चितकाल के लिए रोक दिया गया था। ट्रंप और कार्नी की मुलाकात दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ली जेई म्युंग द्वारा आयोजित एक विशेष रात्रिभोज के दौरान हुई। सूत्रों के अनुसार, इस बैठक में माहौल पहले थोड़ा तनावपूर्ण रहा, लेकिन बाद में दोनों नेताओं के बीच संवाद सौहार्दपूर्ण हो गया। राष्ट्रपति ट्रंप ने बाद में अमेरिकी मीडिया से कहा, "प्रधानमंत्री कार्नी से मेरी बातचीत अच्छी रही, लेकिन व्यापार वार्ता अभी दोबारा शुरू नहीं होगी। हमें पहले यह देखना होगा कि हमारे संबंध किस दिशा में जा रहे हैं।"

इस घटनाक्रम के बीच, कार्नी ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से भी एक अहम मुलाकात की, जिसे उन्होंने "नए आर्थिक संतुलन की दिशा में सकारात्मक शुरुआत" बताया। कार्नी ने कहा कि कनाडा अब अपनी अर्थव्यवस्था को अमेरिकी निर्भरता से धीरे-धीरे मुक्त करने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने कहा, "यह बदलाव आसान नहीं होगा और एक दिन में नहीं आएगा, लेकिन हमें अपनी आर्थिक नीतियों में विविधता लानी ही होगी।"